RNI-RAJBIL/2009/32418

Vol: 10, Issue : 2, July 2018-December 2018

Samvahini

Half Yearly Newsletter | Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

A graded by NAAC

NAAC Re-accredited 'A' Grade Certificate

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद

NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL

An Autonomous Institution of the University Grants Commission

Certificate of Accreditation

The Executive Committee of the
National Assessment and Accreditation Council
on the recommendation of the duly appointed
Peer Team is pleased to declare the
Jain Vishva Bharati Institute
(Deemed to be University u/s 3 of the UGC Act, 1956)
Ladnun, Dist. Nagaur, Rajasthan as
Accredited
With CGPA of 3.11 on the four point scale
at A grade
valid up to July 07, 2018

Date : July 08, 2013

Director

EC/64/RAR/25

आचार्य महाश्रमण

अनुशास्ता
जैन विश्व भारती संस्थान

अनुशास्ता उवाच

ज्ञान के विकास के लिये स्वाध्याय करें

प्रश्न किया गया– **सज्झाएणं भंते! जीवे किं जणयइ?** स्वाध्याय करने से जीव क्या प्राप्त करता है ? उत्तर दिया गया – **सज्झाएणं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ।** स्वाध्याय करने से ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होता है।

हमारे जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है– ज्ञान। जिस आदमी में ज्ञान का अभाव होता है, वह एक प्रकार से अंधा होता है। अंधे आदमी के लिए जैसे बहुत सारी चीजें अज्ञात रह जाती हैं, वैसे ही आदमी के ज्ञान पर जब आवरण आया हुआ होता है तब वह जान नहीं पाता। जैन कर्मवाद के अनुसार आठ कर्मों में पहला कर्म है– ज्ञानावरणीय कर्म। यह हमारे ज्ञान को आवृत करता है। जिस प्रकार आंख पर पट्टी लगा लेने से दिखाई नहीं देता, उसी प्रकार ज्ञानावरणीय कर्म का उदय हो जाने से आदमी जान नहीं पाता।

आदमी का यह लक्ष्य रहे कि जीवन में ज्ञान का विकास हो और ज्ञान का विकास तब होता है जब ज्ञानावरणीय कर्म कमजोर पड़ता है। ज्ञानावरणीय कर्म को हल्का या कमजोर करने का एक उपाय है – स्वाध्याय। प्राकृत भाषा में इसे सज्झाय कहा जाता है। यह स्व और अध्याय दो शब्दों से बना है। अपना अध्ययन करना, अपने बारे में जानना स्वाध्याय है। स्वाध्याय का सीधा संबंध आत्मा के साथ है।

अनुक्रमणिका

01.	11वां दीक्षान्त समारोह	06-07
02.	एक्सपर्ट कमेटी का निरीक्षण	08-09
जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग		
03.	International Conference on Mahaveer Vani	10
प्राकृत एवं संस्कृत विभाग		
04.	संस्कृत दिवस	11
05.	हिन्दी दिवस समारोह	12
योग एवं जीवन विज्ञान विभाग		
06.	तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला	13
07.	कॅरियर मार्ग दर्शन कार्यक्रम	14
08.	तीन दिवसीय व्यक्तित्व विकास शिविर	15
अहिंसा एवं शांति विभाग		
09.	महात्मा गांधी के 150वाँ जयंती दिवस कार्यक्रम	16
10.	तीन दिवसीय आमुखीकरण एवं प्रेक्षाध्यान शिविर	17
समाज कार्य विभाग		
11.	केम्पस रिक्रूटमेंट/दो दिवसीय आमुखीकरण कार्यक्रम	
12.	केरल आपदा पीड़ितों के लिए सहायता/विश्व साक्षरता दिवस	18
13.	सतर्कता जागरूकता सप्ताह के तहत रैली/विश्व एड्स दिवस	19
14.	गुजरात के भुज क्षेत्र के आये विद्यार्थियों ने किया अवलोकन	20
15.	अन्तर्राष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिक दिवस	20
शिक्षा विभाग		
16.	शिक्षण शैली पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित	21-22
17.	प्रसार भाषण माला/शैक्षणिक भ्रमण/वृक्षारोपण	23
18.	जन्माष्टमी/दीपावली/गणेश चतुर्थी व हिन्दी दिवस	24
19.	प्रतिभा खोज व शिक्षक दिवस समारोह	25
20.	शिक्षकों के लिए 15 दिवसीय ओरियेन्टेशन प्रोग्राम	26
आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय		
21.	फ्रेशर पार्टी	27
22.	तीन दिवसीय आमुखीकरण एवं प्रेक्षाध्यान शिविर	28
23.	शिक्षक दिवस/व्याख्यान माला	29
24.	शिक्षा के साथ घुड़सवारी/कॅरियर निर्माण जागरूकता	30
25.	गरबा नृत्य/रक्षा बंधन/बाल दिवस	31-32
26.	वृक्षारोपण/गुरू पूर्णिमा/हिन्दी दिवस	33
27.	जन जागरूकता रैली का आयोजन	34
संस्थान की अन्य विविध गतिविधियाँ		
28.	विख्यात कवि राजेश चैतन्य का स्वागत/गुरू पूर्णिमा/ विश्वविद्यालय को दर्शन क्षेत्र में सर्वोच्च सम्मान/ महाप्रज्ञ का जन्म दिवस/नियमित ध्यान कार्यक्रम/ भारतीय संस्कृति का भविष्य व्याख्यान/खमत खामणा पर्व/ गांधी सिद्धांतों पर नाटक एवं भजन/मातृ संस्था के नव पदाधिकारियों का स्वागत/खेल-कूद प्रतियोगिताएं आयोजित/महिला कानून संबंधित राष्ट्र व्यापी प्रतियोगिता/पूर्व छात्र सम्मेलन	35-43

Mahadev Lal Saraogi
Anekant Shodhpeeth

Understanding Jainism Programme

International Summer School

International Summer School on 'Understanding Jainism' was organized by Anekant Shodh Peeth from July 23 to August 12, 2018.

It is interdisciplinary in nature, with participating faculty of Humanities, Social Science and linguistics and emphasizes Jain Philosophy, Ethics, Nonviolence, Meditation, Art and Architecture and life-style in India. The programme was organised keeping in view to orient the participants with the concept and ideas in Jainism and to develop the attitude of nonviolence. In addition to this, a special course on Oriental Languages was also organised for the participants in which Prakrit, Sanskrit and Hindi Languages were taught.

The entire academic session was held through lectures, discussions and presentation. Besides academic programmes students had special visits to wild life sanctuary, some places of archaeological and historical importance of Ladnun and adjoining areas, trekking programme to Dungar Balaji and interaction with spiritual personalities. The Visit to local Jain families were organised in order to understand the indian culture, Jain Life style and the Socio-Cultural aspects of Jain laities. Mehandi, Cultural interaction and Personal meeting with monks and nuns were also held. Visit to schools and many other activities were appreciated by the participants. On the completion of courses all the students appeared for exams and were awarded with the certificate and grade. The

programme was successfully carried out under the enlightened guidance of hon'ble Vice-Chancellor Prof. B.R. Dugar. The academic Convener of the programme was Dr. Samani Shreyas Prajna and Dr. Samani Amal Prajna and its administrative convenor was Dr. Yogesh kumar Jain.

Participants Comments : Alice Rogovoy remarked that the programme was instrumental for the academic excellence and emotional and spiritual elevation. JVBI has the wonderful environment, good schedule and great diversity of speakers. She also observed that the courses content was well designed. Preksha Meditation and Yoga classes were very important and experimental component of the programme. Girija Gupta commented that these were the unforgettable moments of her life. The teaching process and the hospitality rendered to the participants were appreciable.

Samvahini

(अर्द्धवार्षिक समाचार पत्र)
जैन विश्वभारती संस्थान

वर्ष-10, अंक-2
जुलाई - दिसम्बर, 2018

संरक्षक
प्रो. बच्छराज दूगड़
कुलपति

सम्पादक
समणी भास्कर प्रज्ञा

कम्प्यूटर एण्ड डिजाईन
पवन सैन

प्रकाशक
जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूं - 341306
नागौर, राजस्थान
दूरभाष : (01581) 226110 226230
फैक्स : (01581) 227472
E-mail : jvbiladnun@gmail.com
Website : www.jvbi.ac.in

सम्पादकीय

विशेषताओं को समेटे प्रगति पथ पर अग्रसर जैन विश्वभारती संस्थान

मरूभूमि राजस्थान में ठेठ ग्रामीण क्षेत्र के एक छोटे से कस्बे लाडनूं में स्थापित एवं यूजीसी से विश्वविद्यालय के रूप में मान्यता प्राप्त जैन विश्व भारती संस्थान अपनी विशेषताओं के लिये पूरे देश ही नहीं बल्कि विदेशों तक विख्यात हुआ है। देश-विदेश के विभिन्न अन्य विश्वविद्यालयों एवं शिक्षण संस्थानों से एमओयू होने से यहां विदेशी विद्यार्थी भी शिक्षा प्राप्त करते हैं। अन्य विश्वविद्यालयों से छात्रों के दल यहां भ्रमण के लिये भी पहुंचते हैं। जैन विश्वभारती संस्थान जहां अपनी शैक्षणिक भिन्नता के लिये पृथक अस्तित्व रखता है, वहीं आने वाले को यहां बहुत सुकून भी मिलता है। यहां ईको-फ्रेंडली और आध्यात्मिक वातावरण के साथ यहां के विद्यार्थियों-शिक्षकों का मर्यादापूर्ण नैतिक आचरण सम्मोहित करने वाला है। यहां अन्य विश्वविद्यालयों से बिलकुल अलग माहौल है, जहां अनुशासन, चरित्र, शांति और सुरम्यता का वास मिलेगा।

जैन विद्या व प्राच्य दर्शन के विकास, प्रसार, अध्ययन व शोध के उद्देश्य से संस्थापित इस विश्वविद्यालय में प्राकृत, संस्कृत, योग व जीवन विज्ञान, अहिंसा एवं शांति के साथ अन्य समस्त आवश्यक शैक्षणिक विषयों एवं स्किल डेवलपमेंट के विषयों का अध्ययन भी करवाया जा रहा है। यह विश्वविद्यालय मूल्यपरक शिक्षण-प्रशिक्षण के लिये समर्पित है। इस संस्थान की स्थापना के पीछे आचार्य तुलसी की दूर दृष्टि रही थी और नैतिक जीवन मूल्यों की समाज में पुनर्स्थापना को मुख्य उद्देश्य बनाकर ही इसे शुरू किया गया था। इस संस्थान का ध्येय वाक्य है- "णाणस्स सार मायारो" अर्थात ज्ञान का सार आचार है। इस ध्येय वाक्य के अनुरूप यहां दुनियावी शिक्षा के साथ व्यक्तिगत आचरण की शुद्धि पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

यहां स्किल डेवलेपमेंट की पूरी व्यवस्था उपलब्ध है। योग व प्राकृतिक चिकित्सा के लिये यहां 3 माह का प्रमाण पत्र कार्यक्रम संचालित किया जाता है। योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के अन्तर्गत एम.ए. के विद्यार्थियों को भी यहां प्राकृतिक चिकित्सा की विभिन्न विधियां सिखाई जा रही है। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की दूरगामी सोच के अन्तर्गत आचार्य महाप्रज्ञ जन्मशताब्दी के अवसर पर यह विश्वविद्यालय आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज आफ नेचुरोपैथी एंड योगा का प्रारम्भ करने जा रहा है। श्री पदमचंद भूतोड़िया व श्री कमल किशोर ललवानी ने इसमें सहयोग प्रदान किया। निश्चित ही इस विश्वविद्यालय के लिये यह एक विशेष मोड़ साबित होगा। इसके अलावा यहां ब्यूटी कल्चर कार्यक्रम में ब्यूटी पार्लर खोलने, केश सज्जा करने आदि का कोर्स करवाया जाता है। इलेक्ट्रिक एवं इलेक्ट्रोनिक्स उपकरणों की मरम्मत व रखरखाव सम्बंधी प्रमाण पत्र कार्यक्रम भी युवाओं को निःशुल्क प्रशिक्षण प्रदान करने की व्यवस्था है। यहां समर प्रोग्राम के अन्तर्गत शोर्ट टर्म कोर्सेज करवाये जाते हैं, जिनमें कुकिंग प्रशिक्षण, योगा ट्रेनिंग, इंटीरियर डिजाईन, क्राफ्टिंग एंड पेंटिंग, स्पोर्टस ट्रेनिंग, बेसिक कम्प्यूटर, टैली, हेयर एंड स्किन केयर, स्पोकन इंगलिश, डांस व मार्शल आर्ट के कोर्स शामिल हैं। संस्थान में छात्राओं व महिलाओं के लिए एटीडीसी के अन्तर्गत सिलाई प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाता है।

विश्वविद्यालय का 11वां दीक्षांत समारोह इस वर्ष चैन्नई के माधवरम में आयोजित किया गया, जिसमें 2904 विद्यार्थियों को उपाधि पत्रक प्रदान किये गये तथा 65 शोधार्थियों को पीएचडी, 11 जनों को स्वर्ण पदक प्रदान किये गये। समारोह में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने घोषणा की कि विश्वविद्यालय में नेशनल मैन्युस्क्रिप्ट सेंटर की स्थापना की जा रही है, जिसमें संस्था और आस पास की पांडुलिपियों के संरक्षण की व्यवस्था होगी। इसके अलावा यहीं डिजीलोकर, केशलेस एवं डिग्री की डिजीटाईजेशन सुरक्षा प्रदान करने का कार्य भी किया गया है। इसके 14 सिक्योरिटी फीचर्स से इस डिग्री की प्रतिलिपि बनाना लगभग असंभव बना दिया गया है। विश्वविद्यालय अपनी विशेषताओं को समेटे हुये निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है।

- समणी भास्कर प्रज्ञा

जीवन पथ को आलोकित करने वाला ज्ञान है महत्त्वपूर्ण - आचार्यश्री महाश्रमण

संस्थान का 11वां दीक्षांत समारोह चैन्नई के माधवरम में आयोजित किया गया। समारोह वहां चातुर्मास प्रवास काल में विराजित तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में किया गया। आचार्यश्री महाश्रमण विश्वविद्यालय के अनुशास्ता भी हैं। समारोह में विश्वविद्यालय से उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों से अनुशास्ता महाश्रमण ने अपने सम्बोधन में कहा - ज्ञान मनुष्य के जीवन के लिये आवश्यक तत्त्वों में से एक है। यह हमारे जीवनपथ को आलोकित करने वाला पवित्रतम और सर्वोपरि तत्त्व है। व्यक्ति को अपने आप में ज्ञान का विकास करना चाहिये तथा इसके साथ ही उसका प्रसार भी यथासंभव करना ही चाहिये। उन्होंने कहा कि जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय ज्ञान के साथ आचार व संस्कारों की शिक्षा भी देता है, क्योंकि ज्ञान की निष्पत्ति आचार के साथ ही होती है।

आर्थिक शुचिता से ही बढेगा देश आगे

उन्होंने विद्यार्थियों से जीवन में विनय और नैतिकता अपनाने की आवश्यकता बताई तथा कहा कि जीवन में विद्या प्राप्ति के साथ ज्ञान वृद्धि के लिये निरन्तर उड़ान भरते रहना चाहिये। हमेशा अपने व्यवहार में नैतिकता रहनी आवश्यक है। नैतिकता का सबसे बड़ा अंग है आर्थिक शुचिता। राजनीति हो या शिक्षा - सभी क्षेत्रों में आर्थिक शुचिता को महत्त्व दिया जाना आवश्यक है, तभी हमारा देश आगे बढ पायेगा। समारोह के मुख्य अतिथि दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष रामनिवास गोयल ने कहा कि देश में अनेक सम्प्रदाय हैं। वे सम्प्रदाय अपने-अपने अधिकारों को सरकार से मांगते हैं, लेकिन साधुवाद है इस तेरापंथ सम्प्रदाय को, जिसके लोग अपने नेक उपार्जन में से राशि निकाल कर इस देश के शिक्षा जगत को अपने पैरों पर खड़ा करने का काम कर रहे हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से हमेशा अपना लक्ष्य ऊंचा रखने की प्रेरणा दी।

उपाधि केवल पड़ाव है मंजिल नहीं

इस अवसर पर समारोह की अध्यक्षता करते हुये संस्थान की कुलाधिपति सावित्री जिन्दल ने कहा कि शिक्षक राष्ट्र निर्माण में नींव का पत्थर होता है। वह दिये की भांति आस पास में शिक्षा का प्रकाश फैलाता है। उन्होंने कहा कि गुरुदेव तुलसी ने कहा था, नैतिक ज्ञान के साथ धैर्य, गंभीरता, नेतृत्व के गुण भी सिखाये जाने चाहिये। जैन विश्वभारती संस्थान इसे ही साकार कर रहा है।

साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा ने शिक्षा को एक पथ बताया तथा कहा कि यह केवल गंतव्य ही नहीं है। शिक्षा के माध्यम से प्रसिद्धि, ऐश्वर्य, पद और सत्ता तक प्राप्त की जा सकती है, लेकिन इनसे आगे के क्षेत्रों की तलाश को खत्म नहीं किया जाना चाहिये। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष रामनिवास गोयल थे। कार्यक्रम में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़, कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अरविंद संचेती, पूर्व अध्यक्ष रमेश बोहरा, डॉ. धर्मचंद लूंकड़, दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी, समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बिजेन्द्र प्रधान, उपकुलसचिव डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, डॉ. युवराज सिंह खंगारोत, अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जुगल किशोर दाधीच, शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन आदि उपस्थित थे।

2904 को दी गई उपाधियां – कार्यक्रम में इस वर्ष के शोधार्थियों को पीएचडी की उपाधियां तथ एमए, एमएससी उत्तीर्ण विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र, उपाधियां व मैडल प्रदान किये गये। कुल 2904 विद्यार्थियों को डिग्रियां वितरित की गई, जिनमें सभी विभागों के 65 शोधार्थियों को पीएचडी, 11 जनों को स्वर्ण पदक एवं अन्य को अधिस्नातक व स्नातक की उपाधियां प्रदान की गई।

संस्थान ने बनाया अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने इस अवसर पर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपतियों का स्मरण करते हुये संस्थान में उनके अवदानों का उल्लेख किया। उन्होंने प्रथम अनुशास्ता आचार्य तुलसी के संस्थान के प्रति व्यक्त उद्गार का उल्लेख करते हुये कहा - यह संस्थान देश के अन्य समस्त विश्वविद्यालयों से इसलिये अलग है कि इसकी स्थापना इस युग के महान आचार्य आचार्यश्री तुलसी ने की थी। यह देश का एकमात्र विश्वविद्यालय है जो मूल्यनिष्ठ शिक्षा को समर्पित है। आचार्य तुलसी ने कहा था कि ''जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय'' एक होनहार बिरवा है जो आगे जाकर कल्पवृक्ष बनेगा। इस दृष्टि से इसका पालन-पोषण और समुचित परिचर्या हो। इसकी मातृसंस्था- जैन विश्व भारती तो सजग रहेगी ही, अन्य लोग भी सजग रहें। पुरुषार्थ, संसाधन और योग्यता के आधार पर इसे संभव बनाया जा सकता है। मेरा विश्वास है कि सभी व्यक्ति मेरे सपने को पूरा करने में सहयोगी बनेंगे, कार्य को आगे बढ़ायेंगे।'' कुलपति ने विश्वविद्यालय को अब तक मिले अवार्डों, यूजीसी द्वारा सेक्शन 12-बी की स्वीकृति प्रदान किये जाने, ओडीएल यानी ओपन एवं डिस्टेंस लर्निंग की स्वीकृति आदि को उपलब्धि बताया और शैक्षणिक गुणवत्ता वृद्धि के लिये नियमित रूप से एकेडमिक ऑडिट किये जाने के बारे में जानकारी दी। यहाँ डिजीलोकर, कैशलेस एवं डिग्री की डिजीटाईजेशन सुरक्षा प्रदान करने का कार्य भी किया गया है। इसके 14 सिक्योरिटी फीचर्स से इस डिग्री की प्रतिलिपि बनाना लगभग असंभव बना दिया गया है। उन्होंने यह भी बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ जन्मशताब्दी के अवसर पर यह विश्वविद्यालय आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज नेचुरोपैथी एंड योगा का प्रारम्भ करने जा रहा है। उन्होंने इसमें सहयोग के लिये पदमचंद भूतोड़िया व कमल किशोर ललवानी के प्रति आभार ज्ञापित किया।

यूजीसी की एक्सपर्ट कमेटी ने किया विश्वविद्यालय का अवलोकन

शिक्षा की कड़ी को पुन: जोड़ने का काम कर रहा है विश्वविद्यालय-प्रो. दूगड़

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा, दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से यह विश्वविद्यालय किन्हीं घरेलू परिस्थितियों की वजह से पढाई से दूर हो चुके लोगों को शिक्षा से जोड़ने का काम सफलता के साथ कर रहा है। इस क्षेत्र में अनुसूचित जाति-जनजाति, पिछड़े, अल्पसंख्यक आदि वर्ग के लोगों और कामकाजी व गृहिणी महिलाओं के साथ वृद्धों व वैरागी लोगों को भी इस दूरस्थ शिक्षा से अपनी पढाई पूरी करने का अवसर मिला है। यहां से जैनोलोजी एवं योग व जीवन विज्ञान से डिग्रियां प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों ने विश्व रिकॉर्ड बनाये हैं तथा विश्व के अनेक देशों में योग-प्रशिक्षक आदि के रूप में काम करके भारतीय ज्ञान व संस्कृति की शिक्षा का प्रसार कर रहे हैं। वे 9 अगस्त को यहां विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) की ओडीएल मोड के लिये गठित एक्सपर्ट कमेटी के समक्ष विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के प्रस्तुतिकरण के समय सम्बोधित कर रहे थे। कुलपति सेमिनार हॉल में आयोजित इस बैठक में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के सम्बंध में सम्पूर्ण विवरण का प्रस्तुतीकरण पीपीटी के माध्यम से भी किया गया। निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने जानकारी दी कि निदेशालय से 500 से अधिक ऐसे उम्रदराज व्यक्तियों ने भी डिग्रियां हासिल की हैं, जिनकी उम्र 80 वर्ष तक पहुंच चुकी थी। दूरस्थ शिक्षा से डिग्री करने वालों ने यूजीसी के नेट को भी क्लीयर किया है।

इनकी रही उपस्थिति

इस प्रस्तुतीकरण बैठक में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के अलावा एक्सपर्ट कमेटी के अध्यक्ष हेमचन्द्राचार्य नोर्थ गुजरात विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीए प्रजापति, कमेटी के समन्वयक यूजीसी के एजुकेशन आफिसर डा. अमित कुमार वर्मा, सदस्य पंजाब विश्वविद्यालय की प्रो. कंचन जैन, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली के प्रो. गौरीशंकर वैंकटेश्वर प्रसाद, डीओयू गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्रो. हिमांशु

चतुर्वेदी, पूणे विश्वविद्यालय के डा. श्रीधर पी गेज्जी एवं दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. चन्दन कुमार चौबे तथा प्रो. नलिन शास्त्री, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी, कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़, उप कुलसचिव डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा, प्रो. समणी संगीतप्रज्ञा, समणी अमल प्रज्ञा, समणी विनयप्रज्ञा, प्रो. अनिल धर, डा. जुगलकिशोर दाधीच, आरके जैन, मुमुक्षु अजीता, मुमुक्षु प्रियंका आदि उपस्थित रहे।

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय की व्यवस्थायें देखीं

यूजीसी की एक्सपर्ट टीम ने यहां जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय का अवलोकन किया। टीम ने दूरस्थ शिक्षा के तहत विश्वविद्यालय में संचालित किये जाने वाले समस्त पाठ्यक्रमों, विद्यार्थियों, केन्द्रों, व्यवस्थाओं आदि की जानकारी प्राप्त की। दूरस्थ शिक्षा की चल रही परीक्षाओं की व्यवस्थाओं को देखा। टीम ने विश्वविद्यालय की प्रयोगशालाओं, विश्वविद्यालय परिसर, केन्द्रीय पुस्तकालय, आर्ट गैलरी, आयुर्वेदिक रसायनशाला, मातु-संस्था के सचिवालय आदि का अवलोकन किया। टीम ने सभी व्यवस्थाओं के अवलोकन के पश्चात् संतोष व्यक्त किया तथा कहा कि यहां की सभी व्यवस्थायें अच्छी हैं तथा डिस्टेंस व ओपन एजुकेशन में विश्वविद्यालय बेहतरीन कार्य कर रहा है।

शिक्षा को सेवा व समर्पण भाव से जोड़ा जाना लाभदायक- प्रो. प्रजापति

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) की ओडीएल मोड के लिये गठित एक्सपर्ट कमेटी के चैयरमेन व हेमचन्द्राचार्य नोर्थ गुजरात विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीए प्रजापति ने कहा है कि जैन विश्व भारती संस्थान विश्वविद्यालय अन्य विश्वविद्यालयों से बिलकुल अलग है। यहां सेवा व समर्पण भाव के साथ शिक्षण कार्य को जोड़ा गया है, जो लाभदायक है। उन्होंने यहां महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में 10 अगस्त को आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुये ये उद्गार व्यक्त किये। जैन विश्वभारती संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने टीम का स्वागत करते हुये विश्वविद्यालय की विशेषताओं के बारे में बताया तथा कहा कि यहां का आध्यात्मिक वातावरण विद्यार्थियों को शांति व मर्यादा पालन सिखाता है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित

कार्यक्रम में सरिता शर्मा व समूह द्वारा प्रस्तुत मारवाड़ी नृत्य को सभी ने सराहा। लाम्बी दाधीच के शास्त्रीय संगीत पर आधारित शिव तांडव नृत्य, पूर्णिमा व प्रियंका के मारवाड़ी पैरोडी गीत पर युगल नृत्य, सौनम कंवर व समूह के राजस्थानी हरियाला वन्ना गीत पर सामूहिक नृत्य, मानसी के भवई नृत्य व कृष्ण लीला के कार्यक्रम को भी खूब दाद मिली। कार्यक्रम में ललिता व समूह तथा अतिश्री एवं समूह के सामुहिक नृत्य, कीमती के रंगीलो म्हारो ढोलना गीत पर एकल नृत्य व आकांक्षा व प्रीति के युगल पंजाबी नृत्य भी प्रभावी प्रस्तुति रहे। मुमुक्षु बहिनों ने कार्यक्रम में नाट्य प्रस्तुति दी। योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विद्यार्थियों ने कार्यक्रम में डा. अशोक भास्कर के निर्देशन में योग के विभिन्न आसनों की प्रस्तुतियां दीं। कार्यक्रम में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़, कुलपति प्रो. बीए प्रजापति के अलावा कमेटी के सदस्यों तथा प्रो. नलिन शास्त्री, जैन विश्व भारती के ट्रस्टी भागचंद बरड़िया व मंत्री जीवनमल मालू आदि उपस्थित रहे।

International Conference on 'MAHAVEER VANI : A Modern Perspective'

Bhagwan Mahaveer International Research Center, Department of Jainology and Comparative Religion & Philosophy, JVBI, Ladnun successfully organized International Conference on 'MAHAVEER VANI : A Modern Perspective' in collaboration with The Jain Philosophical Society – Nashik (JPSN) on November 25, 2018. The Chief purpose of this conference was conserving, amplifying, protecting and enhancing Jainism. The paramount was fully met out in the course of this event.

Dr. Vikram Kumar Shah Secretary of JPSN extended a warm welcome to the delegates and highlighted the chief purpose of organizing the conference and paid his sincere gratitude towards Nashik Industrialists for their support in organizing Conference.

Dr. Bipin Doshi focused on importance and relevance of Jain Principles in today's world and reiterated that by following Jain Principles many problems of the world can be solved. Narendra Goliya, industrialist, elaborated about the different aspects of non-violence and how one follows violence unknowingly. Dr. Amal Prajna and introduced about the place and work of Jain Vishva Bharati Institute with the help of a documentary and presented her topic 'Forgiveness in Modern Perspective' Dr. Vikram Kumar Shah stated the role of Jain Scholars in keeping Jainism alive and spreading it in all over the world. Key Note Speaker Dr. Sudhir V. Shah, a senior Neuro-physician in Ahmedabad revealed the unknown concepts of science, mathematics, micro-biology etc. existing in Jainism.

Samani Samyaktva Prajna explained about the relevance of Non-violence in our practical life. Dr. Pratap Sancheti explained how Preksha Meditation effects fasting and elaborated the scientific aspects of Fasting and meditation.

Session ended with vote of thanks by Prof. Dr. G.B.Shah, President of JPSN and Shree Ranjan D. Shah, Treasurer of JPSN with the call for group pictures and hi tea.

संस्कृत दिवस

ज्ञान-विज्ञान, संस्कृति से परिचित होने के लिये सीखें संस्कृत- डॉ. संगीत प्रज्ञा

जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के तत्त्वावधान में 25 अगस्त को आयोजित संस्कृत दिवस समारोह में मुख्य वक्ता प्रो. दामोदर शास्त्री ने कहा है कि हमारा ध्येय हमेशा श्रेष्ठ बनने का रहना चाहिये। हम आर्य बनें, हमारी भाषा आर्य हो, हमारी शिक्षा, हमारा क्षेत्र, हमारा व्यवसाय आदि समस्त श्रेष्ठ यानी आर्य होने चाहिये। भाषा आर्य बनाने के लिये संस्कृत मौजूद है। भाषा ही आर्यत्व का आधार है। संस्कृत हमें संस्कारित करती है। यह वाणी का परिष्कार करती है। अगर ध्यान दें तो हमें संस्कृत का वर्चस्व हर क्षेत्र में दिखाई देगा। चाहे नमस्ते शब्द हो या न्यायालय का सत्यमेव जयते- ये सब संस्कृत का ही प्रभाव है। संस्कृत शब्दों का भंडार है। समस्त भाषायें शब्दों के लिये संस्कृत की ओर ही देखती हैं और उससे ही शब्द ग्रहण करती हैं। भाषा का सारा विकास ही संस्कृत पर आधारित है। उन्होंने बताया कि श्रावण मास की पूर्णिमा से हमारे देश में वेदों का अध्ययन शुरू करने की परम्परा रही है। इसी कारण इस दिवस को भारत सरकार ने संस्कृत दिवस घोषित किया है।

संस्कृत साहित्य में है अथाह ज्ञान का भंडार

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने संस्कृत दिवस की शुभकामनायें देते हुये संस्कृत को समृद्ध भाषा बताया तथा कहा कि संस्कृत के शास्त्र समुद्र की तरह अथाह है। इनमें समस्त प्रकार का ज्ञान-विज्ञान भरा पड़ा है। उन्होंने संस्कृत को लोगों तक पहुंचाने के लिये आवाज उठाने की जरूरत बताई तथा कहा कि यह देववाणी होने के साथ ही जनभाषा भी है। प्राकृत एवं संस्कृत विभागाध्यक्ष डा. समणी संगीतप्रज्ञा ने बताया कि संस्कृत भाषा हमारे देश की प्राचीन ही नहीं बल्कि सुसमृद्ध भाषा है, जिसमें देश के प्राचीनतम ग्रंथ वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत आदि की रचना हुई है। अपने देश के ज्ञान-विज्ञान, संस्कृति आदि से परिचित होने के लिये आवश्यक है कि हम संस्कृत व प्राकृत भाषा सीखें। हमें संस्कृत का पठन-पाठन सीखने के साथ सम्भाषण भी सीखना चाहिये। संस्कृत व प्राकृत भाषाओं का महत्व सदैव रहेगा, इसलिये इनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये।

संस्कृत नाटक का प्रस्तुतिकरण

कार्यक्रम में छात्र विपुल जैन ने संस्कृत को फिर से प्रचलन में लाये जाने की आवश्यकता बताई और कहा कि हम जीवन में संस्कृत का उपयोग बढ़ायें एवं जन-जन तक उसे पहुंचायें। मुमुक्षु बहिनों ने इस अवसर पर लोक कथा पर आधारित संस्कृत नाटिका प्रस्तुत की। मुमुक्षु सुरभि ने संस्कृत पहेलियां बूझी और उनके उत्तर प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का प्रारम्भ मंगलाचरण से किया गया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन डा. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। कार्यक्रम में अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डा. जुगल किशोर दाधीच, जैन विद्या विभाग के डा. योगेश कुमार जैन, सुनीता इंदौरिया एवं विदेश से अध्ययनार्थ आई छात्रायें आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मुमुक्षु प्रेक्षा व मुमुक्षु सुरभि ने किया।

अभिलेख, लिपियों व भाषा विज्ञान पर व्याख्यान आयोजित

संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के तत्त्वावधान में अभिलेख, लिपियों एवं भाषा विज्ञान के सम्बंध में दो दिवसीय व्याख्यान-माला का आयोजन 30 अगस्त को किया गया। व्याख्यानमाला में में दिल्ली के डा. रवीन्द्र कुमार वशिष्ठ ने विद्यार्थियों को अभिलेखों एवं लिपियों की जानकारी देते हुये ब्राह्मी लिपि, खरोष्ठी लिपि आदि की वर्णमाला का ज्ञान करवाया तथा इन लिपियों में अक्षर लेखन का अभ्यास करवाते हुये इन लिपियों के उद्भव व विकास का विस्तृत विवेचन किया। उन्होंने बताया कि भाषा को लिपियों में लिखने का प्रचलन भारत में ही शुरू हुआ। यहां से अन्य देशों के लोगों ने लेखन को सीखा। प्राचीनकाल में ब्राह्मी और देवनागरी लिपि का प्रचलन था। ब्राह्मी और देवनागरी लिपियों से ही दुनियाभर की अन्य लिपियों का जन्म हुआ। ब्राह्मी भी खरोष्ठी की तरह ही पूरे एशिया में फैली हुई थी। उन्होंने अभिलेख, ताड़पत्र, भोजपत्र आदि की जानकारी भी दी।

हिन्दी में शिखर तक पहुंचने की शक्ति- प्रो. त्रिपाठी

हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन

संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के तत्त्वावधान में हिन्दी दिवस के अवसर पर 13 सितम्बर को सेमिनार हॉल में कार्यक्रम का आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि हिन्दी को प्रतिष्ठा दिलवाने में महर्षि दयानन्द सरस्वती और महात्मा गांधी ने बहुत प्रयास किये थे, जबकि ये दोनों ही गुजराती भाषी रहे थे। हिन्दी में शिखर तक पहुंचने की वह शक्ति है, जो अन्य किसी भाषा में नहीं है, लेकिन इसके लिये हमें संकल्प लेकर काम करना होगा।

हिन्दी की प्रतिष्ठा के लिये आंदोलन जरूरी

मुख्य अतिथि प्रो. दामोदर शास्त्री ने कहा कि हिन्दी को पुष्ट बनाना है तो उसकी जड़ को मजबूत करना होगा और हिन्दी की जड़ संस्कृत भाषा है। हिन्दी में आज अंग्रेजी व उर्दू के शब्दों की भरमार हो रही है, यह गलत है। हम अपने मूल संस्कृत से जुड़ कर ही हिन्दी को श्रेष्ठ बना सकेंगे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने हिन्दी को व्यावहारिक व तकनीकी भाषा बनाने की जरूरत बताई और कहा कि इससे हिन्दी अपना स्थान बना पायेगी। विशिष्ट अतिथि शोध निदेशक प्रो. अनिल धर ने कहा कि हिन्दी सरल व सहज भाषा है। हिन्दी ही हमारे सोचने की भाषा है। कार्यक्रम में वित्ताधिकारी आर.के. जैन, डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज, जगदीश यायावर, डा. वीरेन्द्र भाटी मंगल, डा. योगेश कुमार जैन ने भी अपने विचार व्यक्त किये तथा हिन्दी को प्रमुख राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिये आंदोलन चलाने पर जोर दिया। कार्यक्रम का प्रारम्भ शोभा ने मंगलाचरण करके किया तथा उन्होंने हिन्दी भाषा पर कविता भी प्रस्तुत की।

नवागन्तुक विद्यार्थियों का स्वागत कार्यक्रम

संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग की विभागाध्यक्ष डा. समणी संगीत प्रज्ञा ने कहा है कि ज्ञान तभी सार्थक बन सकता है, जब आचार उन्नत होता है। बिना आचार के ज्ञान महत्त्वहीन हो जाता है। वे यहां अपने विभाग के नवागन्तुक विद्यार्थियों के स्वागत के लिये 3 अगस्त को किये गये आयोजन को सम्बोधित कर रही थी। उन्होंने विद्यार्थियों को संस्कृत वार्तालाप के लिये प्रेरित किया। वरिष्ठ संस्कृत विद्वान प्रो. दामोदर शास्त्री ने इस अवसर पर कहा कि जब व्यक्ति अपना लक्ष्य निर्धारित कर लेता है तो उसे अपनी पूरी शक्ति को केन्द्रित करके उसमें झोंक देना चाहिये। इस अवसर पर विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने आये विदेशी विद्यार्थियों ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में सभी नव-प्रविष्ट विद्यार्थियों ने अपना परिचय प्रस्तुत किया। उन्हें भी फैकल्टी से परीचित करवाया गया। कार्यक्रम के दौरान विविध गेम्स भी खिलाये गये। अंत में मुमुक्षु दर्शिका ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन मुमुक्षु वंदना व करिश्मा ने किया।

योग व ध्यान के अध्ययन पर तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला

चेतना को उच्च स्तर पर पहुंचाने का मार्ग है प्रेक्षाध्यान- मुनि जयकुमार

जैन मंदिर व विश्व भारती देखकर अभिभूत हुये अमेरिकन विद्यार्थी

संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग तथा इंटरनेशनल स्कूल फोर जैन स्टडीज के संयुक्त तत्वावधान में 20 जुलाई को आयोजित तीन दिवसीय योग एवं मेडिटेशन स्टडीज विषयक अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला में अमेरिका से आये विद्यार्थियों को मुनिश्री जयकुमार ने आत्मा व शरीर के पृथक अस्तित्व, चेतना के ऊर्ध्वारोहण, मोक्ष एवं प्रेक्षाध्यान के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि प्रेक्षाध्यान से व्यक्ति शरीर और आत्मा की सत्ता को अलग-अलग अनुभव कर पाने में सक्षम हो सकता है। प्रेक्षाध्यान से चेतना के उच्च स्तर तक पहुंचा जा सकता है। मुनि जयकुमार ने अमेरिकन विद्यार्थियों की शंकाओं का समाधान भी किया। समणी विनयप्रज्ञा ने इन विद्यार्थियों ने प्रेक्षाध्यान की साधना विधि के बारे में बताया तथा कार्यशाला के सभी संभागियों को प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करवाया। इससे पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने संभागियों को बताया कि प्रेक्षाध्यान साधना की सरलतम विधि है, जिसके परिणाम वैज्ञानिक कसौटी पर खरे उतरे हैं। उन्होंने आसन व ध्यान के प्रयोग करवाये तथा अमेरिका से आये इन संभागियों को लाडनूं के प्राचीन दर्शनीय स्थल बड़ा जैन मंदिर में दर्शन करवाये। मंदिर में भूगर्भ से निकले मंदिर, सरस्वती की कलात्मक प्रतिमा आदि को देखकर अभिभूत हो गये। उन्होंने यहां जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के हरीतिमा युक्त सुन्दर व स्वच्छ वातावरण, मयूरों के स्वच्छंद विचरण आदि को भी श्रेष्ठ बताया तथा कहा कि ध्यान व साधना के लिये यह स्थान सबसे बेहतरीन है। यहां उन्होंने आचार्य तुलसी स्मारक पर भक्तामर स्तोत्र का पाठ भी किया। कार्यशाला में भाग लेने वाले सम्भागियों में अमेरिका से आये प्रो. चैपल, डेरिया ग्रिगोरेवा, लिजाबेथ मारीकूज, लिडीया जेन लुसियाना, सुसान लुइस, कैथरीन फ्रांसिस वेम, केरिन एलिजाबेथ, स्टेफनी क्रिस्टीना, सुवान मेगन मेकनैली, जैसन रे व आशी शामिल थे।

योग है व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायक- प्रो. दूगड़

तीन दिवसीय योग एवं मेडिटेशन स्टडीज विषयक अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला द्वितीय दिवस में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने अमेरिका से आये विद्यार्थियों से कहा कि पूरे विश्व में जैन संस्कृति के विभिन्न पहलुओं, सिद्धांतों एवं प्रेक्षाध्यान व योग के प्रति रुझान बढ़ा है। अनेक देशों के विश्वविद्यालयों में जैन चेयर की स्थापना की गई है तथा प्रेक्षाध्यान व योग को विषय बनाया गया है। उन्होंने विश्व के अनेक विश्वविद्यालयो से जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के एमओयू के बारे में भी बताया। प्रो. दूगड़ ने योग को जीवन का ऐसा विषय बताया, जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होता है। कार्यशाला के संभागियों को उन्होंने प्रतीक चिह्न प्रदान करके सम्मानित किया। इस अवसर पर प्रो. चैपल ने कुलपति को अमेरिका के लॉस एंजिल्स स्थित लोयेला मैरीमाउंड यूनिवर्सिटी के बारे में जानकारी दी तथा कहा कि दोनों विश्वविद्यालयों के बीच जैनिज्म एवं प्राच्य विद्याओं के अध्ययन-अध्यापन को लेकर भागीदारी संभव है।

संयम से सभी समस्याओं का समाधान संभव

इससे पूर्व कार्यशाला के संभागियों ने यहां भिक्षु विहार में विराजित मुनि जयकुमार से विभिन्न समसामयिक विषयों पर चर्चा की। मुनिश्री ने उन्हें बताया कि भ्रूण हत्या, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, भोजन विवेक आदि के बारे में जैन पक्ष सबसे श्रेष्ठ कहा जा सकता है, जिसमें संयम को महत्त्व दिया जाता है। समणी विनयप्रज्ञा ने कार्यशाला में प्रेक्षाध्यान की उपसंपदाओं के बारे में बताया। मियामी अमेरिका की फ्लोरिडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर समणी सत्यप्रज्ञा व समणी रोहिणी प्रज्ञा ने कैलिफोर्निया में होने वाले विविध प्रेक्षाध्यान कार्यक्रमों के बारे में बताया।

कॅरियर मार्गदर्शन कार्यक्रम

पूरे विश्व में फैली भारतीय योग विद्या का एक हजार मिलियन डॉलर है व्यवसाय- डॉ. शेखावत

संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने कहा है कि योग को भारतीय ऋषियों ने आत्म-उद्धार और मोक्ष प्राप्ति के साधन के रूप में आविष्कृत किया था, लेकिन आज समय के साथ उसका स्वास्थ्य बदल गया है और योग आज स्वास्थ्य प्राप्ति का साधन बन गया है। वे यहां 19 दिसम्बर को सेमिनार हॉल में आयोजित कैरियर मार्गदर्शन कार्यक्रम के तहत राजकीय सुजला महाविद्यालय के विद्यार्थियों को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने "योग शिक्षा के उपयोग और केरियर निर्माण में सहायक की भूमिका" के बारे में बोलते हुये कहा कि भारत की यह विद्या आज पूरे विश्व में फैली हुई है और एक हजार मिलियन डॉलर का व्यवसाय केवल योग शिक्षा का है। प्रत्येक कार्यक्षेत्र में कर्मचारियों की कार्यक्षमता बढ़ाने के लिये अपने संस्थान में योग-सलाहकारों की नियुक्ति कर रहे हैं। आज लगभग हर व्यक्ति में विविध प्रकार की शारीरिक समस्यायें और तनाव की स्थिति है, जिसका एकमात्र कारण लाईफ स्टाइल बदलना है। इसे योग द्वारा बदला जा सकता है। योग से शरीर व मन का संतुलन बना रहता है।

प्राचार्य हुये योग शिक्षा से प्रभावित

कार्यक्रम में राजकीय सुजला महाविद्यालय के प्राचार्य डा. चतरसिंह डोटासरा ने बताया कि सुजला कॉलेज के युवा विकास केन्द्र के तहत आयोजित व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम के तहत विद्यार्थियों के भ्रमण का कार्यक्रम जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय का रखा गया, जिसमें उन्हें केरियर निर्माण की दिशा में मार्गदर्शन प्राप्त हो सके। उन्होंने कार्यक्रम में प्राप्त जानकारी को विद्यार्थियों के लिये लाभदायक बताया तथा कहा कि वे यहां योग शिक्षा से बहुत प्रभावित हुये हैं और स्वयं यहां योग शिविर में भाग लेने के इच्छुक हैं। कार्यक्रम में समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. विजेन्द्र प्रधान ने एम.एस.डब्लू. करने वाले विद्यार्थियों के भविष्य और केरियर के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुये बताया कि यह हंड्रेड पर्सेंट जोब ओरियेंटेड कोर्स है, जो इस क्षेत्र में एकमात्र इसी विश्वविद्यालय में है।

नि:शुल्क होस्टल, मेस व शिक्षण शुल्क की सुविधायें

डा. रवीन्द्र सिंह शेखावत ने अहिंसा एवं शांति विभाग के अन्तर्गत संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों एवं सुविधाओं के बारे में जानकारी देते हुये बताया कि विश्वविद्यालय में एम.ए. डिग्री के कोर्स में दो साल तक 10 हजार रूपये वार्षिक छात्रवृति देय है। इसी प्रकार एम.फिल. और पीएच.डी. में भी छात्रवृत्ति की सुविधा देय है। इस संस्थान की अलग विषयों के कारण पृथक पहचान है और इसी कारण यहां विदेशी विद्यार्थियों के साथ विभिन्न प्रांतों के विद्यार्थी भी अध्ययनरत हैं। डा. योगेश जैन ने जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग के अन्तर्गत संचालित कोर्सेज के बारे में विवरण प्रस्तुत किया एवं उनकी उपयोगिता व उनसे मिलने वाले रोजगार के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जैनोलॉजी विषय पढने वाले विद्यार्थियों को यहां छात्रावास एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क है। इसके अलावा पीएच.डी. करने वाले शोधार्थियों के लिये 28 हजार रूपये सहयोग प्रदान किये जाने की सुविधा है। कार्यक्रम संयोजक डा.सत्यनारायण भारद्वाज ने प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के बारे में बताया और कहा कि यहां से स्नातकोत्तर करने वाले सभी विद्यार्थियों के लिये रहना-खाना और फीस सभी नि:शुल्क हैं। नेट और जे.आर. एफ. के लिये भी सुविधा उपलब्ध है तथा कम्पीटिशन की तैयारी के लिये भी नि:शुल्क सुविधा उपलब्ध है।

विद्यार्थियों ने किया विभिन्न सुविधाओं का अवलोकन

राजकीय सुजला महाविद्यालय से युवा विकास केन्द्र के तत्त्वावधान में आये छात्र-छात्राओं ने यहां जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय की योग विभाग, विज्ञान संकाय आदि की विभिन्न प्रयोगशालाओं, जिम की सुविधा, छात्रावास, विभिन्न विभागों, स्मार्ट कक्षाओं, डिजीटल स्टुडियो, विशाल ग्रंथागार लाईब्रेरी, हस्तलिखित पुस्तकों, कलाकृतियों, रमणीक हरीतिमा युक्त परिसर, ध्यान केन्द्र, खेल मैदान आदि का अवलोकन किया तथा डा. सत्यनारायण भारद्वाज एवं स्थानीय स्टाफ से पूरी जानकारी प्राप्त की।

तीन दिवसीय व्यक्तित्व विकास शिविर

जीवन में मूल्यों के धारण से निखरता है व्यक्तित्व

संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के तत्त्वावधान में तीन दिवसीय व्यक्तित्व विकास शिविर का शुभारम्भ 2 अगस्त को यहां कुलसचिव वीके कक्कड़ के मुख्य आतिथ्य में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विभागाध्यक्ष डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने की तथा दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, डा. हेमलता जोशी व डा. विनोद सियाग विशिष्ट अतिथि थे। शिविर का शुभारम्भ करते हुये कुलसचिव वीके कक्कड़ ने कहा कि व्यक्ति के जीवन का समुचित विकास तभी कहा जायेगा, जब उसका व्यक्तित्व संतुलित और निखार वाला हो। व्यक्तित्व में निखार आता है मूल्यों को जीवन में उतारने से। दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. त्रिपाठी ने बताया कि जीवन में उच्च चरित्र ही सफलता का मापदंड होता है। इसे ध्यान में रखते हुये इस जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय में चरित्र निर्माण पर पूरा जोर दिया गया है। उन्होंने शिविर के सम्भागियों को विश्वविद्यालय में संचालित पाठ्यक्रमों, विशेषताओं, व्यवस्थाओं व सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। शिविर के समन्वयक डा. अशोक भास्कर ने प्रेक्षाध्यान, योग व जीवन विज्ञान के बारे में बताया तथा इनके माध्यम से व्यक्तित्व विकास के मार्ग पर प्रकाश डाला।

स्वच्छता अभियान के प्रचारक बनें विद्यार्थी

लाडनूं में स्वच्छता अभियान को लेकर व्याख्यान आयोजित

जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के तत्त्वावधान में महात्मा गांधी के 150वीं जन्म जयंती वर्ष के उपलक्ष में 8 सितम्बर को एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। स्वच्छता अभियान पर आधारित इस कार्यक्रम में व्याख्यान देते हुये विभागाध्यक्ष डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने कहा कि विद्यार्थियों को स्वच्छता अभियान के प्रचारक की भूमिका निभानी चाहिये। सफाई की शुरूआत हमें खुद से और अपने आस पास के परिसर से ही करनी होगी। अपने मोहल्ले और गांव को स्वच्छ रखने में अगर हम सफल रहे तो निश्चित मानिये कि यह पूरा देश भी स्वच्छ हो जायेगा। उन्होंने कहा हमें व्यावहारिक रूप से सफाई के महत्त्व को लागू

करना चाहिये। कचरे का निष्पादन करने में सूखे-ठोस व गीले कचरे को अलग-अलग एवं पैक करके डालने के महत्त्व को समझाया तथा कहा कि कार्बनिक अपशिष्ट पदार्थों को कभी भी खुले में नहीं डालना चाहिये। डा. शेखावत ने खुले में शौच एवं मूत्रादि करने से होने वाली हानियों को गिनाया तथा हाथ साफ करने, घर में जूते लेकर नहीं जाने, जल-संग्रहण को स्वच्छ बनाने, उसे ढक कर रखने आदि पारम्परिक एवं व्यावहारिक सफाई के महत्त्व को समझाया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अशोक भास्कर ने किया।

महात्मा गांधी के 150वें जयंती दिवस पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन

जरूरतों और आय के संतुलन से ही दूर होगी आर्थिक असमानता- कक्कड़

महात्मा गांधी के 150वें जयंती वर्ष के अवसर पर 2 अक्टूबर को यहां संस्थान के तत्वावधान में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्त्वावधान में ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने आवश्यकता और आय के संतुलन को आवश्यक बताते हुये कहा कि महात्मा गांधी का यह मुख्य सिद्धांत था कि अपनी जरूरत के लिये आमदनी करनी चाहिये, लेकिन अपनी आमदनी के लिये जरूरतों को बढाना नहीं चाहिये। उन्होंने देश की आबादी के एक प्रतिशत के पास आय का एकत्रिकरण और 75 प्रतिशत आबादी की आवश्यकतायें तक पूरी नहीं हो पाने को अनुचित व असंतुलन बताया। गांधी ने इसी कारण जरूरतों के हिसाब से आय को बढाने की आवश्यकता बताई, ताकि आय का वितरण आम आदमी तक पहुंचना समान रूप से संभव हो सके।

गांधी प्रतिपादित मूल्यों को अपनाने की जरूरत - कार्यक्रम में दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने महात्मा गांधी के जीवन के अनेक अछूते प्रसंगों का उल्लेख किया तथा उनके द्वारा प्रतिपादित जीवन मूल्यों को अपनाने का आह्वान किया। शोध निदेशक प्रो. अनिल धर ने महात्मा गांधी के बताये मूल्यों पर चलने की आवश्यकता बताई।

शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने बताया कि गांधी ने सर्वांगीण शिक्षा पर जोर दिया। योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने गांधी के आदर्शों पर चलते हुये दलितों से दूरियां घटाने पर बल दिया। अंग्रेजी विभाग के विभागाध्यक्ष डा. गोविन्द सारस्वत ने गांधी के सत्य व अहिंसा के रास्ते में समस्त समस्याओं के समाधान का मार्ग बताया। कार्यक्रम में मुमुक्षु सारिका, छात्र पारस जैन व मेहनाज बानो ने भी अपने विचार प्रकट किये। डा. प्रगति भटनागर ने अंत में आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डा. जुगलकिशोर दाधीच ने किया।

सरदार पटेल के कारण ही सुरक्षित है देश की एकता और अखंडता

राष्ट्रीय एकता दिवस

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्वावधान में लौह-पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की जन्म-जयंती के उपलक्ष में 31 अक्टूबर को राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के शोध-निदेशक प्रो. अनिल धर ने देश की एकता, अखंडता और सम्प्रभुता को सुरक्षित रखने में सरदार पटेल की भूमिका के बारे में बताया तथा कहा कि पटेल के कारण ही आज देश संघीय ढांचे में ढला हुआ है। विभागाध्यक्ष डॉ. जुगल किशोर दाधीच ने सरदार पटेल के अंग्रजी हुकूमत के खिलाफ किये गये प्रयासों एवं आजादी के लिये संघर्ष के बारे में ब्यौरा प्रस्तुत किया। डा. रवीन्द्र सिंह राठौड़ ने सरदार पटेल के विचारों के बारे में बताया। कार्यक्रम का संचालन डा. विकास शर्मा ने किया।

नैतिक मूल्यों के समावेश से जीवन में परिवर्तन आता है

तीन दिवसीय आमुखीकरण एवं प्रेक्षाध्यान शिविर

तीन दिवसीय आमुखीकरण एवं प्रेक्षाध्यान शिविर का 28 जुलाई को समारोह पूर्वक समापन किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि शोध निदेशक प्रो. अनिल धर ने कहा कि जीवन में मूल्यों का अपना महत्व होता है। उनके बिना जीवन सारहीन बन जाता है। नैतिक मूल्यों का समावेश जीवन को आमूल-चूल रूप से बदल देता है तथा जीवन में सुदृश फूलों की खुशबू भर जाती है।

समारोह के मुख्य वक्ता अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डा. जुगल किशोर दाधीच ने कहा कि जीवन में समय की पाबंदी को महत्व अवश्य दें। समय पर किये गये कार्य ही सुफल देने वाले होते हैं। दीर्घसूत्रता से जीवन में बिगाड़ आता है। प्रचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने तीन दिवसीय शिविर का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। शिविरार्थी छात्राओं सरिता शर्मा, संध्या वर्मा, शिवानी आचार्य आदि ने अपने अनुभव अन्य छात्राओं के साथ साझा किये। शिविर का अंतिम दिवस व्यक्तित्व विकास एवं आमुखीकरण पर केन्द्रित रहा। सभी शिविरार्थी छात्राओं ने इस अवसर पर वृक्षारोपण करके अपने संकल्प को मजबूत किया। शिविर के अंतिम सत्र में योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने छात्राओं को लाफिंग थैरेपी से परिचित करवाया तथा अभ्यास करवाते हुये उसके लाभ बताये। कार्यक्रम का संचालन डॉ. बलवीर सिंह चारण ने किया।

व्यक्ति की गरिमा व समानता का अधिकार रक्षित होना आवश्यक- प्रो. धर

विश्व मानवाधिकार दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्त्वावधान में मानवाधिकार दिवस पर 10 दिसम्बर को कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में शोध निदेशक प्रो. अनिल धर ने व्यक्ति के मौलिक अधिकारों के बारे में बताते हुये राज्य व राष्ट्रीय स्तर के मानवाधिकार आयोगों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा कर रखी है। संयुक्त राष्ट्र के चार्टर में कहा गया है कि कुछ ऐसे मानवाधिकार हैं, जो कभी छीने नहीं जा सकते, जिनमें मानव की गरिमा है और स्त्री-पुरुष के समान अधिकार हैं। प्रो. धर ने बताया कि किसी भी इंसान की जिंदगी, आजादी, बराबरी और सम्मान का अधिकार ही मानवाधिकार है। डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने इस अवसर पर अपने सम्बोधन में अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों को भी पूरी जिम्मेदारी से निभाने की सलाह दी तथा कहा कि अगर हर व्यक्ति अपने दायित्वों को समझ ले तो अधिकारों की रक्षा स्वतः ही हो जाती है और कानून का उपयोग ही नहीं करना पड़ता है। कार्यक्रम में हरफूल ठोलिया, राजेश माली, उषा जैन, रजनी प्रजापत, वंदना प्रजापत, आसिफ खान, शीतल प्रजापत, हंसराज कंवर, प्रतिभा कंवर, किरण बानो, सरिता लोहिया, सपना जांगिड़, हीरालाल भाकर, गजानन्द चारण, मेहरून, तमन्ना आदि उपस्थित रहे।

एम.एस.डब्ल्यू. के विद्यार्थियों का कैम्पस रिक्रूटमेंट

संस्थान के समाज कार्य विभाग में 20 जुलाई को कैम्पस रिक्रूटमेंट का आयोजन किया गया। इसके लिये जोधपुर के एनजीओ उन्नत शैक्षणिक विकास संगठन की टीम ने एमएसडब्ल्यू के 12 विद्यार्थियों का परीक्षण किया। समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान ने बताया कि संस्था द्वारा कुल 7 विद्यार्थियों का चयन किया जाने के लिये एनजीओ द्वारा समूह चर्चा एवं साक्षात्कार का आयोजन किया गया। उन्होंने बताया कि यहां इस विभाग से स्नातकोत्तर करने वाले शत-प्रतिशत विद्यार्थियों का प्लेसमेंट हो जाता है।

समाज में नैतिकता व सेवा के विस्तार के लिये हो शिक्षा का उपयोग

दो दिवसीय आमुखीकरण कार्यक्रम

संस्थान के समाज कार्य विभाग के तत्त्वावधान में दो दिवसीय आमुखीकरण आयोजन 6-7 अगस्त को आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुये आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि शिक्षा तभी सार्थक है, जब उसका उपयोग समाज में नैतिकता के विस्तार और सेवा कार्य को प्रसारित करना होता है। इस संबंध में जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग के छात्र समाज सुधार व सेवा कार्यों में निरन्तर लगे हुये हैं तथा समाज को नशाबंदी, स्वच्छता, रोगमुक्ति आदि कार्यक्रमों के साथ जन जागृति को ध्येय बनाकर कार्यरत हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान ने समाज कार्य विभाग के दो वर्षीय पाठ्यक्रम का वर्णन प्रस्तुत किया तथा कहा कि अनुशासन और मूल्यों का पालन इस संस्थान की विशेषता है। यहां नैतिक मूल्यों को शिक्षा के साथ जोड़ा गया है, जो आज समाज के लिये सबसे ज्यादा जरूरी बन गये हैं। कार्यक्रम में इन्द्रा राम पूनिया, चांदनी सिंह आदि शोधार्थी, विद्यार्थी एवं व्यख्यातागण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन अंकित शर्मा ने किया।

स्वच्छता दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के समाज कार्य विभाग द्वारा 2 अक्टूबर को ग्राम जोरावरपुरा में स्वच्छता दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष डॉ. बिजेन्द्र प्रधान, मुख्य अतिथि स्टेशन मास्टर नीतिन गर्ग एवं विशिष्ट अतिथि ऋतु स्वामी (प्रिंसिपल कनक श्याम विद्या मंदिर) उपस्थित रही। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि गर्ग ने स्वच्छता के महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ. विकास शर्मा द्वारा सक्रिय रूप से सहयोग किया गया। विभाग के सभी छात्र एवं बस्ती के नागरिकों द्वारा सहभागिता दर्ज की गयी।

केरल के आपदा पीड़ितों की सहायता के लिये उतरे विश्वविद्यालय के विद्यार्थी

केरल प्रांत के बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ जैन विश्वभारती संस्थान के समाज कार्य विभाग के तत्त्वावधान में विद्यार्थियों द्वारा जन समुदाय से आर्थिक सहयोग प्राप्त किया गया। उन्होंने सबसे पहले विश्वविद्यालय के समस्त स्टाफ से बाढ़ सहायतार्थ चंदा एकत्र किया और 30 अगस्त को शहर में रैली निकाल कर आम जन से चंदा लिया। विश्वविद्यालय से इस रैली से शोध निदेशक प्रो. अनिल धर ने हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। इस अवसर पर समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान, कार्यक्रम की संयोजक डा. पुष्पा मिश्रा, शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन, अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डा. जुगल किशोर दाधीच, डा. विकास शर्मा, अंकित शर्मा, रंजीत जायसवाल आदि उपस्थित थे।

विश्व साक्षरता दिवस का आयोजन

विश्व साक्षरता दिवस के अवसर पर संस्थान के समाज कार्य विभाग के तत्त्वावधान में 8 सितम्बर को निकटवर्ती ग्राम डुजार में एक कार्यक्रम का आयोजन करके साक्षरता के प्रति जागरूकता पैदा की गई। विभागाध्यक्ष बिजेन्द्र प्रधान व अंकित शर्मा के निर्देशन में समाज कार्य विभाग के विद्यार्थियों द्वारा राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय डुजार में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानाचार्य राजेन्द्र कुमार ने की। मुख्य अतिथि डा. पुष्पा मिश्रा ने इस अवसर पर कहा कि पढ़ाई के अभाव में किसान एवं ग्रामीणों को बहुत प्रकार के संकटों का सामना करना पड़ता रहा है। साक्षर होने के बाद उनसे आसानी से बचा जा सकता है। प्रधानाचार्य राजेन्द्र कुमार ने शिक्षा के महत्व पर जोर देते हुये कहा कि अगर बाल्यावस्था में ही विद्यालय भेजना शुरू कर दिया जावे, तो कोई भी अनपढ़ नहीं रह सकता है। कार्यक्रम में आयुष जैन ने साक्षरता दर के बारे में बताया तथा कहा कि हमें देश के विकास की धारा के साथ रहने के लिये शिक्षा का प्रसार करना होगा। विद्यालय की छात्रा शांति स्वामी व पूजा स्वामी ने गांव-गांव में लोगों में साक्षरता के प्रति जागरूकता लाने की बात कही और कहा कि साक्षरता बढ़ाने के लिये हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है। प्रारम्भ में जितेन्द्र उपाध्याय ने साक्षरता दिवस के महत्व को बताया तथा स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। अंत में प्रिया सिंह ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डा. विकास शर्मा ने किया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अन्तर्गत रैली एवं शपथ कार्यक्रम

संस्थान के समाज कार्य विभाग एवं राष्ट्रीय सेवा योजना ईकाई के संयुक्त तत्त्वावधान में राष्ट्रीय सतर्कता आयोग नई दिल्ली के निर्देशानुसार मनाये जा रहे सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अन्तर्गत 5 गोद लिये गांवों में विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। इसके तहत तहसील के ग्राम बाकलिया में 31 अक्टूबर को एक विशाल जागरूकता रैली का आयोजन राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बाकलिया के सहयोग से किया गया। रैली का शुभारम्भ प्रधानाचार्य अर्जुनदेव राणा, विश्वविद्यालय की सहायक आचार्य डा. प्रगति भटनागर व विकास शर्मा के नेतृत्व में किया गया। रैली में भ्रष्टाचार मिटाओ नया भारत बनाओ के नारे को महत्त्व देते हुये लोगों में जागृति पैदा की गई। विद्यालय में भ्रष्टाचार विषय पर एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। इसमें एन.एस.एस. की स्वयं सेविका रश्मि बोकड़िया व सरिता शर्मा ने अपने विचार प्रकट किये। संचालन छात्रा सुनिता ने किया।

भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिये शपथ ग्रहण

इसके अलावा यहां शपथ ग्रहण समारोह आयोजित कर छात्राओं एवं समस्त स्टाफ को नये भारत के निर्माण की दिशा में भ्रष्टाचार के उन्मूलन एवं नैतिकता के विस्तार के लिये शपथ दिलवाई गई। डा. प्रगति भटनागर ने सभी शिक्षकों व छात्राओं को भावी जीवन में सभी क्षेत्रों में विशेष जागरूकता रखने के लिये शपथ दिलवाई। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने इस अवसर पर अपने सम्बोधन में छात्राओं से हर क्षेत्र में जागरूक रहने का आह्वान करते हुये उन्हें भ्रष्टाचार से दूरी बनाये रखने के लिये प्रेरित किया। समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान ने कार्यक्रम में नैतिक भ्रष्टाचार को व्याख्यायित किया और उससे बचने के उपायों पर प्रकाश डाला। उन्होंने केन्द्रीय सतर्कता आयोग और उसके कार्यक्रमों के बारे में बताया तथा सतर्कता जागरूकता सप्ताह के संबंध में विस्तार से बताया। कार्यक्रम में संस्थान के सभी प्राध्यापक, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्ति को दुत्कारें नहीं, उसे प्यार दें- डॉ. मिश्रा

विश्व एड्स दिवस पर लोगों को रेड रिबन लगाकर दिया बचने का संदेश

संस्थान के समाज कार्य विभाग में 1 दिसम्बर को एक कार्यक्रम का आयोजन कर सबको रेड रिब लगाये व जागरूकता का संदेश दिया गया। कार्यक्रम में एड्स व रोकथाम के बारे में बताया गया। विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान ने बताया कि एड्स का खतरा केवल उन लोगों को होता है, जो एक से अधिक लोगों से यौन संबंध रखता है, इंजेक्शन द्वारा नशीली दवायें लेता है, पिता या माता के एच.आई.वी. संक्रमण के पश्चात पैदा होने वाला बच्चा और बिना जांच किया हुआ रक्त ग्रहण करने वाला व्यक्ति है। डा. पुष्पा मिश्रा ने बताया कि एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्ति के साथ हाथ मिलाने, एक साथ भोजन करने, एक ही घड़े का पानी पीने, एक ही बिस्तर और कपड़ों के प्रयोग, एक ही कमरे अथवा घर में रहने, एक ही शौचालय, स्नानघर प्रयोग में लेने से, बच्चों के साथ खेलने आदि सामान्य संबंधों से यह रोग नहीं फैलता है। उन्होंने एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्ति को दुत्कारने के बजाय उसे प्यार देने की आवश्यकता बताई।

लगाये रेड रिबन- विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग के विद्यार्थियों ने विश्व एड्स दिवस पर यहां समस्त विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों व स्टाफ को रेड रिबन लगाकर उन्हें एड्स से बचाव का संदेश दिया। इसी प्रकार उन्होंने बालसमंद गांव में मनसुखलाल सारड़ा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पहुंच कर लोगों को एड्स रोग की जानकारी दी एवं उससे बचाव के तरीके समझाये। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि उपप्रधानाचार्य मंजू कंवर ने एच.आई.वी. एड्स की वर्तमान स्थिति व फैलाव की संभावना बताई। विशिष्ट अतिथि डा. बलवीर सिंह ने एड्स का इतिहास बताते हुये समस्या के समाधान पर प्रकाश डाला और जन सहयोग जरूरी बताया। ललिता शर्मा ने विश्व एड्स दिवस 2018 की थीम ''अपनी स्थिति जानें'' के बारे में बताते हुये जागरूकता आवश्यक बताई। जितेन्द्र उपाध्याय ने एड्स के कारण व बचाव पर प्रकाश डाला। डा. बिजेन्द्र प्रधान, डा. पुष्पा मिश्रा व जितेन्द्र सिंह ने भी विचार व्यक्त किये। इस कार्यक्रम में रणजीत जायसवाल, फिरदौस, ममता, मुकेश, युधिष्ठिर, सुनील, चित्रा, सुनीता, राधा, दीपक आदि के अलावा विद्यालय के छात्रा व ग्रामवासी भी उपस्थित रहे।

समाज कार्य के अध्ययन से सकारात्मकता पनपती है- डॉ. प्रधान

गुजरात के भुज क्षेत्र से आये विद्यार्थियों ने किया जैविभा विश्वविद्यालय का अवलोकन

गुजरात के भुज स्थित बाबा नाहर सिंह महाविद्यालय के समाजकार्य विभाग के 70 विद्यार्थी अपने प्राचार्य डा. गोविन्द एवं सहायक आचार्य डा. हरीश के नेतृत्व में यहां जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) में शैक्षणिक भ्रमण के लिये आये। उन्होंने संस्थान के विभिन्न विभागों, कॉलेज, पुस्तकालय, परिसर आदि का अवलोकन किया तथा उनके बारे में जानकारी प्राप्त की। यहां समाज कार्य विभाग के तत्वावधान में 18 सितम्बर को एक कार्यक्रम का आयोजन कर सबका स्वागत किया और उन्हें विश्वविद्यालय व समाज कार्य विभाग के कार्यक्रमों, गतिविधियों, पाठ्यक्रमों आदि की जानकारी दी। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान ने कहा कि समाज कार्य विषय ऐसा क्षेत्र है, जिसमें विद्यार्थी उच्च शिक्षा पाने के साथ-साथ देश की सेवा का अवसर भी प्राप्त करता है। उन्होंने बताया कि जैन विश्वभारती संस्थान से सोशल वर्क में स्नातकोत्तर करने वाले विद्यार्थियों का शत-प्रतिशत प्लेसमेंट हो जाता है तथा वे केन्द्र, राज्य सरकारों तथा विभिन्न औद्योगिक, कार्पोरेट एवं एनजीओ से जुड़ कर अपना भविष्य संवार रहे हैं। उन्होंने दो संस्थानों के विद्यार्थियों के बीच परस्पर ज्ञान के आदान-प्रदान की परम्परा को श्रेष्ठ बताया। डॉ. पुष्पा मिश्रा ने विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग के अन्तर्गत संचालित पाठ्यक्रम की विषयवस्तु एवं उसके विविध आयामों के बारे में विस्तार से बताया। बाबा नाहर सिंह कॉलेज, भुज के डॉ. गोविन्द व डा. हरीश ने अपने कॉलेज में समाज कार्य विभाग द्वारा संचालित की जाने वाली अनेक गतिविधियों पर प्रकाश डाला। दोनों संस्थानों के विद्यार्थियों ने भी इस कार्यक्रम में अपने-अपने अनुभव भी साझा किये। कार्यक्रम के अंत में सहायक आचार्य अंकित शर्मा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डा. विकास शर्मा ने किया।

अन्तर्राष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिक दिवस मनाया

संस्थान के समाज कार्य विभाग द्वारा 1 अक्टूबर को ग्राम दूजार में अन्तर्राष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिक दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ग्राम दूजार आश्रम के पुजारी स्वामी ज्ञानानन्द महाराज थे। विशिष्ट अतिथि देवमित्र आर्य थे। मुख्य अतिथि स्वामी ज्ञानानन्द ने अपने वक्तव्य में समाज में बड़ों के साथ हो रहे दुर्व्यवहार को अफसोस जनक बताया तथा बच्चों में संस्कार डालने पर जोर दिया। कार्यक्रम की समन्वयक एवं क्षेत्रीय कार्य पर्यवेक्षक डॉ. पुष्पा मिश्रा ने बड़ों के साथ हो रहे दुर्व्यवहार का कारण वर्तमान समय में बदलते आर्थिक परिप्रेक्ष्य को बताया तथा उन्होंने कहा कि बड़ों का सम्मान करना हमारा कर्त्तव्य है। साथ ही वरिष्ठ नागरिकों का अधिकार भी है कि वो गरिमामय जीवन जीएं। डॉ. विकास शर्मा ने भी अपने विचार रखे। समाज कार्य विभाग के सभी छात्रों ने सक्रिय सहभागिता दर्ज की। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष डॉ. विजेन्द्र प्रधान एवं सहायक आचार्य अंकित शर्मा के महत्त्वपूर्ण सुझाव मिले।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अन्तर्गत प्रतियोगिताओं का आयोजन

संस्थान के समाज कार्य विभाग एवं राष्ट्रीय सेवा योजना ईकाई के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय सतर्कता आयोग नई दिल्ली के निर्देशानुसार मनाये जा रहे सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अन्तर्गत तहसील के ग्राम दुजार में "भ्रष्टाचार मिटाओ, नया भारत बनाओ" विषय पर निबंध प्रतियोगिता एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन 1 नवम्बर को किया गया। समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान के मार्गदर्शन में दुजार स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में अंकित शर्मा के निर्देशन में आयोजित प्रतियोगिता के दौरान हुये कार्यक्रम में प्रधानाचार्य भंवरलाल स्वामी ने कहा कि भ्रष्टाचार वर्तमान में इस देश में बहुत गहराई से पैठ गया है, जिसे समूल उखाड़ फेंकने के लिये हर नागरिक और बच्चे-बच्चे को जागृत होना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र के लोगों का अपने क्षेत्र में ही कार्यरत पटवारी, ग्रामसेवक, नर्स, ए.एन.एम., राशन वितरक आदि से प्रतिदिन काम पड़ता है और उन्हें भ्रष्टाचार से पग-पग पर रूबरू होना पड़ता है। समाज कार्य विभाग के सहायक आचार्य अंकित शर्मा ने कहा कि हम सब मिलकर ही भ्रष्टाचार मिटा सकते हैं।

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित

सीखने की शैली ही नवीन ज्ञान की रचना को संभव बनाती है– प्रो. ज्ञानानी

संस्थान के शिक्षा विभाग के तत्त्वावधान में 23 सितम्बर को आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के शुभारम्भ सत्र में शिक्षण शैली के सम्बंध में बोलते हुये मुख्य अतिथि प्रो. टी.सी. ज्ञानानी ने कहा है कि प्राच्य कक्षा शिक्षण विधि में केवल व्याख्यान व प्रवचन ही शामिल थे, लेकिन अब इसमें गतिविधि व प्रबंधन के सिद्धांत भी शामिल कर लिये गये हैं। शिक्षण की विभिन्न विधियों में एक नयी संकल्पना रचनावाद को लेकर आई है। इसमें विद्यार्थी द्वारा निरन्तर सीखने, अपने ज्ञान में वृद्धि करने, उसमें विस्तार व प्रसार करने तथा संशोधन करने की प्रक्रिया लगातार जारी रखता है, कक्षा प्रबंधन के अन्तर्गत विद्यार्थी के सीखने की शैली को समझने की जरूरत है, क्योंकि सीखने की शैली ही नवीन ज्ञान की रचना संभव बनाती है। बच्चों के ज्ञानात्मक व्यवहार में निरन्तर अंतर आया है।

प्रभावी शिक्षण के लिये प्रभावी संचार जरूरी

सत्र की अध्यक्षता करते हुये रजिस्ट्रार विनोद कुमार कक्कड़ ने कहा कि शिक्षण की तकनीक निरन्तर बदलती रहती है। इस प्रकार का बदलाव हर प्रबंधन एवं कार्य में आता है, लेकिन आवश्यकता इस बात की है कि हम इस बदलाव में अपने आप को कैसे ढालें। उन्होंने कहा कि शिक्षा का प्रस्तुतिकरण एवं उसका छात्र में ग्रहण दोनों ही प्रभावी होने आवश्यक है और ऐसी पद्धति ही शिक्षण की श्रेष्ठ प्रणाली कही जा सकती है। विशिष्ट अतिथि प्रो. गोपीनाथ शर्मा ने संगोष्ठी में कहा कि जहां हमें ज्ञान से अपने आचरण में बदलाव करना चाहिये, वैसे ही हमें अपने आचरण, व्यवहार और शब्द प्रयोग से विद्यार्थी में सिखाने का काम भी करना चाहिये।

शिक्षा विभाग

सूचना और ज्ञान के अंतर को समझना आवश्यक

विशिष्ट अतिथि प्रो. संतोष मित्तल ने अपने सम्बोधन में कहा कि शिक्षा के लिये सम्प्रेषण महत्वपूर्ण है। विषय, टॉपिक, परिवेश, विश्वविद्यालय के उद्देश्य, सीखने वाले छात्र आदि के आधार पर हमारे द्वारा शिक्षण कार्य करवाने की विधि में बदलाव आता है। उन्होंने शिक्षण की सुविधा पद्धति, तुलनात्मक पद्धति, सहकारी पद्धति आदि के बारे में बताया तथा कहा कि शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिये हमें खुद भी निरन्तर पढ़ना होगा और अपनी समीक्षा भी करते रहना होगा। सत्र के प्रारम्भ में शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने अतिथियों का परिचय करवाया। डा. मनीष भटनागर ने राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। डा. गिरीराज भोजक, डा. गिरधारीलाल, डा. सरोज राय व डा. विजेन्द्र प्रधान ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन से किया गया। प्रारम्भ में छात्राओं ने मंगलाचरण व स्वागत गीत प्रस्तुत किया। अंत में डा. भावाग्रही प्रधान ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डा. अमिता जैन ने किया।

तकनीकी ज्ञान के साथ संस्कारों का बीज-वपन आवश्यक

संगोष्ठी के समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुये प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने कहा कि वर्तमान में उस शिक्षणशैली की आवश्यकता है, जो विद्यार्थियों में ज्ञानवृद्धि के साथ संस्कारों के बीज भी बो सके। उन्होंने शिक्षण में तकनीक के प्रयोग को वर्तमान की आवश्यकता बताते हुये कहा कि शिक्षक को तकनीकी संसाधनों पर अपनी निर्भरता कायम नहीं करनी चाहिये। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. दामोदर शास्त्री ने शिक्षण के साथ क्रियात्मकता जरूरी बताते हुये कहा कि क्रियाकलाप शिक्षण को प्रभावी बना देते हैं। अभिज्ञान शाकुन्तलम, गीता आदि ग्रंथों मे आये सरस प्रसंगों को शिक्षणशैली में शामिल करके शिक्षण को रूचिकर, सरस व प्रभावी बनाया जा सकता है। विश्वविद्यालय के कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने राष्ट्रीय संगोष्ठी के सफल आयोजन की सराहना की तथा कहा कि समस्त शिक्षकों एवं छात्राध्यापिकाओं को इस संगोष्ठी का लाभ मिलेगा तथा इससे शिक्षण शैली में व्यापक सुधार की गुंजाइश बनेगी। संगोष्ठी में राजस्थान व अन्य प्रांतों के विभिन्न महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों से शिक्षकों ने भाग लिया; संगोष्ठी के सम्भागी शिवम मिश्रा व रवीन्द्र मारू ने जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय संगोष्ठी की सराहना की। अतिथियों के स्वागत में मोनिका व समूह ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। अतिथियों का परिचय डा. गिरिराज भोजक ने प्रस्तुत किया। डा. भावाग्रही प्रधान ने राष्ट्रीय संगोष्ठी की रिपोर्ट पेश की। अंत में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डा. गिरधारीलाल शर्मा ने किया।

विद्यार्थियों की व्यक्तिगत समस्या को समझ कर करें पाठ-योजना के प्रयोग- प्रो. शर्मा

संस्थान के शिक्षा विभाग में 18 अक्टूबर को प्रसार भाषण माला के अन्तर्गत इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी (इग्नू) नई दिल्ली के शिक्षा संकाय के प्रो. महेश चन्द्र शर्मा ने "समावेशी शिक्षा में आई.सी.टी, मूल्यांकन, मूल्य शिक्षा का योगदान" विषय पर अपने सम्बोधन में कहा कि एक अच्छे शिक्षक को अपने विद्यार्थियों में चारित्रिक मूल्यों का विकास करना चाहिये तथा मूल्य, ज्ञान, संस्कृति, व्यवहार, आत्म-प्रेरणा तथा व्यक्तिगत समस्या को समझते हुये उदाहरण प्रस्तुत करने चाहिये। शिक्षक को अपने विद्यार्थी का मित्र, पथ-प्रदर्शक, निर्देशक की भूमिका निभाने में सक्षम होना चाहिये। उन्होंने कहा कि शिक्षक को समावेशी शिक्षा में विद्यार्थियों की व्यक्तिगत समस्याओं को समझ कर अपनी पाठयोजना में आई.सी.टी. का सशक्त रूप में प्रयोग करना चाहिये तथा नैतिक मूल्यों को शिक्षक को अपने विषय में समाहित कर लेना चाहिये। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बनवारी लाल जैन ने प्रारम्भ में व्याख्यानकर्ता का परिचय प्रस्तुत किया। इस अवसर पर प्रो. भाबाग्राही प्रधान, डा. सरोज राय, डा. आभा सिंह, डा. विष्णु कुमार तथा अन्य संकाय सदस्य व छात्राध्यापिकायें उपस्थित रही।

छात्राध्यापिकाओं का शैक्षणिक भ्रमण

संस्थान के शिक्षा विभाग के तत्त्वावधान में छात्रा- ध्यापिकाओं के लिये एक दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया गया। इसके तहत आयोजित रंगारंग कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन ने कहा कि इसमें छात्राध्यापिकाओं में साहित्य-सम्बंधी कार्यक्रमों के साथ नेतृत्वशीलता, प्रबंधन, सामूहिक भावना आदि के गुणों का विकास भी संभव हो पाता है।

सरदार शहर के आचार्य महाप्रज्ञ समाधिस्थल के सभागार में 19 सितम्बर को आयोजित रंगारंग कार्यक्रम में इन प्रशिक्षणार्थी छात्राओं ने भजन, लोकगीत, प्रेरक-प्रसंग, दोहे, श्लोक, चुटकुले आदि प्रस्तुत किये। इस भ्रमण कार्यक्रम में छात्राध्यापिकाओं ने ताल छापर अभयारण्य, साईंनाथ मंदिर, सरदार शहर का इच्छापूर्ण बालाजी मंदिर, तेरापंथ के आचार्य महाप्रज्ञ का समाधि स्थल आदि का अवलोकन किया। भ्रमण कार्यक्रम की प्रभारी डा. सरोज राय ने बताया कि प्रशिक्षणार्थियों ने क्षेत्रीय संस्कृति, अध्यात्म तपोभूमि, पर्यावरण, वन्य संरक्षण आदि के बारे में जानकारी प्राप्त की।

पर्यावरण रक्षा के लिये श्रेष्ठ है वृक्षारोपण- प्रो. दूगड़

छात्राध्यापिकाओं ने किया वृक्षारोपण

संस्थान के शिक्षा विभाग के तत्त्वावधान में 25 जुलाई को विश्वविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के नेतृत्व में एवं विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन की देखरेख में आयोजित इस कार्यक्रम में नीम्बू, अनार, बिल्व, गुलाब आदि विभिन्न पौधों को लगाया गया। पौधों की व्यवस्था छात्राध्यापिकाओं ने स्वयं के स्तर पर की। इस अवसर पर कुलपति प्रो. दूगड़ ने छात्राओं को प्रेरणा देते हुये कहा कि वृक्ष हमारे जीवनदायी होते हैं, इनके महत्व को समझ कर हमें जीवन में वृक्षारोपण के साथ उनकी समुचित देखरेख, पोषण एवं वृक्षों को बचाने की तरफ ध्यान देना चाहिये। उप कुलसचिव डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, वित्ताधिकारी राकेश कुमार जैन, डा. अमिता जैन, डा. भाबाग्रही प्रधान, डा. आभा सिंह, सुनिता इंदौरिया, डा. सरोज राय, डा. गिरिराज भोजक, डा. विष्णु कुमार, डा. मनीष भटनागर, डा. गिरधारी लाल शर्मा आदि पूरे स्टाफ एवं छात्राओं ने वृक्षारोपण में अपनी सहभागिता निभाई।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में 1 सितम्बर को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने पर्व मनाये जाने की अहमियत बताते हुये कार्यक्रम में कहा कि समय-समय पर मनाये जाने वाले पर्व हमें खुशी, उत्साह व उमंग प्रदान करते हैं। इनसे हम तनाव, घुटन व संघर्ष से मुक्त होते हैं तथा मन को बहुत शांति मिलती है, खुशी मिलती है और प्रेरणा मिलती है। कार्यक्रम संयोजक डा. सरोज राय ने कृष्ण को सामाजिक नेता व जननायक बताते हुये कहा कि केवल मानव मात्र ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि के लिये उन्होंने उपकारी कार्य किये थे। उन्होंने कृष्ण को नियति के प्रति प्रतिबद्ध, समय के लिये प्रतिबद्ध, संगठन शक्ति कारक एवं कर्मयोगी बताया। डा. गिरधारीलाल शर्मा, नीतू जोशी, पूजा, मुग्धा आदि ने कृष्ण के जीवन पर भजन प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन छात्राध्यापिका मोनिका ने किया।

दीपावली पर कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग के तत्वावधान में दीपावली उत्सव पर 2 नवम्बर को एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में छात्राध्यापिकाओं एवं शिक्षकों को सम्बोधित करते हुये डा. मनीष भटनागर ने सहिष्णुता एवं ईमानदारी जैसे गुणों को भगवान राम से ग्रहण करने की आवश्यकता बताई। डा. गिरीराज भोजक ने दीवाली पर

की जाने वाली लक्ष्मी पूजा और साधना में विधि लक्ष्मियों के बारे में बताया तथा कहा कि उलूक पर सवार लक्ष्मी से प्राप्त धन शुद्ध नहीं होता, लेकिन गजलक्ष्मी पूजन से प्राप्त धन पूरी तरह से सात्त्विक होता है। डा. सरोज राय ने गणेश, लक्ष्मी व सरस्वती इन तीन देवी-देवताओं की पूजा का रहस्य बताया। डा. भावाग्रही प्रधान व डा. विष्णु कुमार ने दीपावली के व्यावहारिक पक्ष और सैद्धांतिक पक्ष को व्याख्यायित किया। कार्यक्रम में नीतू जोशी, मनीषा शर्मा व बादू ने भी अपने विचार एवं गीत प्रस्तु किये। कार्यक्रम का संचालन एकता जोशी ने किया।

गणेश चतुर्थी व हिन्दी दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में गणेश चतुर्थी पर्व के साथ 13 सितम्बर को हिन्दी दिवस भी मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने गणेश चतुर्थी को उत्साहवर्द्धक त्यौहार बताया तथा कहा कि इस अवसर पर होने वाले महोत्सव इस देश की पहचान के रूप में देखे जाते हैं। उन्होंने बताया कि लिपि के आविष्कारक के रूप में गणेश को माना गया है, इसलिये हिन्दी दिवस पर उन्हें मनाने की प्रासंगिकता भी है। प्रभारी डा. गिरीराज भोजक ने कहा कि गणेश की प्रतिमा में जो उनका विलक्षण स्वरूप दिखाई देता है, वह शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिये प्रेरणादायी व शिक्षाप्रद है। संयोजक डा. सरोज राय ने कहा कि हमें अपनी राष्ट्रभाषा को अपनाना चाहिये तथा उसका प्रयोग करके गर्व का अनुभव होना चाहिये। कार्यक्रम में छात्राध्यापिका प्रियंका सिखवाल व सरोज ने भी विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर डा. मनीष भटनागर, डा. भावाग्रही प्रधान, डा. विष्णु कुमार, डा. अमिता जैन, डा. गिरधारी लाल शर्मा, डा. आभासिंह, मुकुल सारस्वत, देवीलाल कुमावत आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मोनिका सैनी ने किया।

सबका साथ सबका विकास भावना से कार्य करना आवश्यक- प्रो. जैन

एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग के तत्त्वावधान में ''एक भारत श्रेष्ठ भारत'' कार्यक्रम का आयोजन 3 अक्टूबर को किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कार्यक्रम में कहा कि सबका साथ सबका विकास की भावना से कार्य करने पर ही देश को श्रेष्ठ बनाया जा सकता है। हम सभी देशवासियों को देश की एकता कायम रखने और उसे महान राष्ट्र के रूप में प्रतिस्थापित करने की दिशा में सदैव सजग रह कर कर्मशील रहना चाहिये। डा. विष्णु कुमार ने कहा कि महात्मा गांधी के सिद्धांतों पर चल कर हम अपने देश को श्रेष्ठ भारत के रूप में स्थापित कर सकते हैं। कार्यक्रम में डा. मनीष भटनागर, डा. भावाग्रही प्रधान, डा. अमिता जैन, डा. सरोज राय, डा. गिरीराज भोजक, डा. आभा सिंह, डा. गिरधारी लाल शर्मा, मुकुल सारस्वत, देवीलाल, दिव्या राठौड़ आदि एवं सभी छात्राध्यापिकायें उपस्थित थीं।

आगे बढने के लिये सकारात्मकता आवश्यक

प्रतिभा खोज व शिक्षक दिवस समारोह आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में 5 सितम्बर को प्रतिभा खोज एवं शिक्षक दिवस समारोह का आयोजन महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने कहा कि छात्राध्यापिकाओं को वर्तमान के नकारात्मकता भरे माहौल में रह कर भी अपनी सकारात्मकता को बनाये रखने की चुनौती है। आगे बढने के लिये हमेशा सकारात्मकता ही काम आती है। उन्होंने तीन सूत्र दिये- टीम वर्क, जीवन का नजरिया और नेटवर्किंग।

सांस्कृतिक प्रस्तुतियां

कार्यक्रम का शुभारम्भ आकांक्षा द्वारा नृत्य के साथ गणेश-स्तुति से किया गया। प्रारम्भ में अतिथियों एवं शिक्षकों ने सरस्वती के चित्र को माल्यार्पण किया गया। इस समारोह में पूनम ने घूमर नृत्य, रितिका, प्रियंका राठौड़, दुर्गा राठौड़ आदि ने राजस्थानी लोक गीतों एवं अन्य गीतों पर मोहक नृत्य की प्रस्तुतियां दी। प्रियंका एवं समूह आदि ने सामूहिक नृत्य प्रस्तुत किया।पूजा कुमारी व सरोज ने गीत व कवितायें प्रस्तुत की। कार्यक्रम में विभाग के शिक्षकों पर आधारित फिल्मी गीतों को जोड़ कर बनाई गई पी.पी.टी. का प्रदर्शन करके सबका मनोरंजन किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि शिक्षक अपने ज्ञान, कौशल और अनुभव को विद्यार्थी को देता है, लेकिन इसके साथ ही वह ध्यान भी रखता है कि वह विद्यार्थियों की कमजोरियों को दूर करे और उन्हें अपनी क्षमताओं को उभार कर बाहर निकालने में सहायता करे।

सेना की बदौलत ही सुरक्षित हैं हम और देश की सीमायें- प्रो. जैन

सर्जिकल स्ट्राइक दिवस मनाया

संस्थान के शिक्षा विभाग के तत्वावधान में सर्जिकल स्ट्राइक दिवस पर 1 अक्टूबर को कार्यक्रम का आयोजन । जवानों की कीर्ति का स्मरण किया गया तथा छात्राओं को राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा प्रदान की गई। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कार्यक्रम में बताया कि भारतीय सेना ने आतंकवादियों के सीमा-पार स्थित ठिकानों को नष्ट करने के लिये सर्जिकल स्ट्राइक को अंजाम दिया गया। उन्होंने बताया कि सर्जिकल स्ट्राइक को गोपनीय तरीके से केवल चुनिन्दा लोगों तक सीमित जानकारी के साथ किये गये आकस्मिक हमले के रूप में क्रियान्वित किया जाता है, जिसमें आंतकियों के छिपे ठिकानों को लक्ष्य बनाया जाता है। इसमें किसी भी नागारिक या अन्य किन्हीं लोगों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया जाता है। प्रो. जैन ने बताया कि हम सभी नागरिगण एवं देश की सीमायें सैनिकों की देशभक्ति के कारण ही सुरक्षित हैं। हमें भी उनके शहीद हो जाने की स्थिति में उनके परिवार जनों की सहायता व सुरक्षा के प्रति जागरूक रहना चाहिये। कार्यक्रम में सभी छात्राध्यापिकायें उपस्थित रहे।

नवीन प्रवृतियों से शिक्षा में गुणवता वृद्धि संभव- प्रो. जैन

विमल विद्या विहार में शिक्षकों के लिये 15 दिवसीय ओरियेंटेशन प्रोग्राम

संस्थान के शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने विद्यालयी शिक्षा में नवीन प्रवृतियों के बारे में अवगत करवाते हुये कहा कि इनके बारे में सभी शिक्षकों की जानकारी होना आवश्यक है। इनसे शिक्षा की गुणवता में वृद्धि संभव हो पाती है। उन्होंने यहां विमल विद्या विहार सीनियर सैकेंडरी स्कूल में संचालित 15 दिवसीय ओरियेंटेशन प्रोग्राम में सम्बोधित करते हुये बताया कि शिक्षण की नवीन प्रवृतियों में ग्रेडिंग सिस्टम, सेमेस्टर सिस्टम, क्रेडिट सिस्टम, मूल्यांकन की पद्धति आदि को विद्यार्थियों को केन्द्रित करके तैयार किया गया है। इनके द्वारा विद्यार्थी अपनी रूचि के अनुसार, अपनी क्षमताओं, योग्यताओं व दक्षताओं का विकास भरपूर ढंग से कर सकें। प्रो. जैन ने बताया कि आज स्मार्ट लर्निंग, ई-लर्निंग, सोशल मीडिया लर्निंग, मोबाईल लर्निंग का प्रचलन तेजी से बढा है, जिससे छात्रों को प्रत्येक स्थान पर अपनी शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा संभव हो पाई है। उन्होंने बताया कि एन.सी.ई.आर.टी. ने मुक्त लर्निंग के कोर्स इन नवीन प्रवृतियों के अन्तर्गत संचालित किये हैं। इनके अलावा कौशल विकास, जीवन कौशल, सम्प्रेषण कौशल, तनाव प्रबंधन, नेतृत्व शैली, शोध लर्निंग, आदि

प्रोजेक्ट मैथड, क्रियात्मक विधि का प्रयोग, पाठ्येतर क्रियायें आदि विषयों के बारे में विस्तार से बताते हुये कहा कि उन्होंने इनसे भी सभी शिक्षकों को अवगत करवाया जाना आवश्यक है।

आई.टी. के उपयोग से शिक्षण कार्य अधिक रूचिकर व उपयोगी बन सकता

अध्यापकों हेतु 'शिक्षण को आधुनिक एवं रोचक बनाने की दृष्टि से शिक्षण में नवीन प्रवृतियों के उपयोग' के सन्दर्भ में आयोजित किये गये 15 दिवसीय ओरियण्टेशन कार्यक्रम का समापन 20 दिसम्बर को किया गया। ओरियेंटेशन कार्यक्रम के अंतिम दिन विश्वविद्यालय में कम्प्यूटर विभाग के विषय-विशेषज्ञ मोहन सियोल ने 'शिक्षण में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग' विषय पर व्याख्यान देते हुये अध्यापकों को सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग से शिक्षण को रूचिकर, आधुनिक एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अत्यधिक उपयोगी बनाया जाने के बारे में बताया और इस सन्दर्भ में सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ उसके प्रायोगिक पहलुओं से भी उन्हें अवगत करवाया।

आधुनिक शिक्षण की उपयोगी जानकारी दी

इस 15 दिवसीय ओरियण्टेशन कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के अनेक प्राध्यापकों डॉ. बी.एल. जैन, डॉ. भाबाग्राही प्रधान, डॉ. गिरधारीलाल शर्मा, डॉ. सरोज राय, डॉ. अमिता जैन, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. आभासिंह, अंकित शर्मा, मोहन सियोल एवं सुश्री दिव्या राठौड़ आदि के व्याख्यान हुए। उन्होंने प्रभावी शिक्षण कार्य में आई.सी.टी., मनोविज्ञान, कक्षा प्रबंधन आदि विभिन्न विषयों पर इस ओरियण्टेशन के माध्यम से विद्यालय के अध्यापकों को बताया और आधुनिक शिक्षण पद्धतियों एवं शिक्षण में वर्तमान में उपयोग की जाने वाली नवीन शिक्षण पद्धतियों से अवगत करवाया, जिनका उपयोग करके शिक्षण को अधिक प्रभावकारी बनाया जा सके।

शिक्षण कौशल के लिये बताया उपयोगी

विमल विद्या विहार विद्यालय के शिक्षकों ने इस ओरियण्टेशन कार्यक्रम को अत्यधिक उपयोगी एवं उनके शिक्षण-कौशल में नवीन पद्धतियों को शामिल करने वाला एवं उनके ज्ञान को वृद्धिंगत करने वाला बताया। ज्ञात हो कि संस्थान ने समय-समय पर क्षेत्र के शिक्षण संस्थानों के अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के लिये ऐसे ओरियण्टेशन कार्यक्रमों एवं विविध प्रशिक्षण कार्यक्रमों का निःशुल्क आयोजन कर शिक्षा के क्षेत्र में अपना बहुमूल्य योगदान देते हुए सदैव एक अग्रणी संस्थान की भूमिका निभाई है।

फ्रेशर पार्टी का आयोजन

आत्मविश्वास से सब कुछ पाया जा सकता है- प्रो. दूगड़

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में नव आगन्तुक छात्राओं के लिए फ्रेशर पार्टी का आयोजन 18 अगस्त को महाप्रज्ञ-महाश्रमण ओडिटोरियम में किया गया। कार्यक्रम में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि असंभव कुछ भी नहीं है, यह मान लिया जावे तो इस जीवन में बहुत कुछ प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने आत्मविश्वास को जागृत करने की आवश्यकता बताते हुये कहा कि ''यूं ही नहीं मिलती राही को मंजिल, एक जूनून सा जगाना होता है।''

कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने कहा कि केवल काम करना ही महत्त्वपूर्ण नहीं है, बल्कि कार्य को उत्साह एवं आनन्द के साथ करना ही विद्यार्थी जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने छात्राओं से अपने ध्येय पद पर निरन्तर गतिमान बने रहने का आशीर्वाद प्रदान किया।

नगीना बानो ने जीता मिस फ्रेशर का खिताब

कार्यक्रम में एक म्युजिकल चेयर प्रतियोगिता रखी गयी, जिस की विजेता सीमा बिड़ियासर एवं नफिसा बानो रही। कार्यक्रम में मिस फ्रेशर का खिताब नगीना बानो को मिला, वहीं इस प्रतियोगिता की रनर-अप हेमलता सैनी व सैकिंड रनर-अप रुकसाना बानो रही। मिस दिवा का खिताब दिव्यता कोठारी को एवं मोस्ट टेलेंटेड का खिताब हिमांशी को गया। तत्पश्चात् कार्यक्रम में मेहनाज बानो द्वारा गीत की प्रस्तुति दी गयी और बाद में निकिता एण्ड ग्रुप, पूजा शर्मा, सुरैया बानो, चेतन एण्ड पूजा, मानसी आदि छात्राओं ने नृत्य प्रस्तुतियां दी।

अन्तर्महाविद्यालयी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता कॉमर्स संकाय की छात्रायें रही विजेता

छात्राओं का छात्राओं के लिये आयोजन, छात्रायें ही संचालक, छात्रायें ही विजेता

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में विवेकानन्द क्लब के तत्वावधान में अन्तर्महाविद्यालय सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन 6 अक्टूबर को किया गया। प्रतियोगिता में महाविद्यालय की विज्ञान, वाणिज्य एवं कला तीनों वर्गों की छात्राओं ने अपनी-अपनी टीम बनाकर हिस्सा लिया। प्रतियोगिता में चार टीमें गठित की गई, जिनमें कॉमर्स की छात्राओं की सी-टीम विजेता रहीं। उप विजेता के रूप में डी-टीम विज्ञान संकाय की छात्रायें रहीं। विजेता व उप विजेता रही दोनों समूहों की समस्त छात्राओं को प्राचार्य आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने पुरस्कृत किया।

इस प्रतियोगिता का आयोजन, संचालन आदि सभी छात्राओं द्वारा ही किया गया। विवेकानन्द क्लब के प्रभारी अभिषेक चारण के निर्देशन में क्लब की छात्रा सचिव कंचन स्वामी एवं सरिता शर्मा ने सभी टीमों से सवाल पूछे तथा मेहनाज बानो ने संचालन किया।

इस अवसर पर प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि महाविद्यालय में हर शनिवार को नियमित रूप से विभिन्न गैर शैक्षणिक गतिविधियों का संचालन किया जाता है, जिसके लिये अलग-अलग रूचि की छात्राओं के लिये अलग-अलग क्लब बनाये गये हैं। इन क्लबों द्वारा अनेक प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता रहता है। इससे छात्राओं में हुनर पनपता है और वे अपने रूचि के विषय में पारंगत हो जाती हैं।

चैम्पियन बनने तक संघर्ष जारी रखें- कुलपति

तीन दिवसीय आमुखीकरण एवं प्रेक्षाध्यान शिविर

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 26 जुलाई को तीन दिवसीय आमुखीकरण एवं प्रेक्षाध्यान शिविर का शुभारम्भ करते हुये कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने हर काम उत्साहपूर्वक करने के लिये प्रोत्साहित किया और कहा कि हमेशा वर्तमान समय का सदुपयोग करें और तब तक लड़ना जरूरी है, जब तक कि चैम्पियन नहीं बन जायें। हारते-हारते ही शिखर पर पहुंचा जा सकता है। हर काम को तुरन्त करें, उसे टालें कभी नहीं। काम को उत्साहपूर्वक करने से ही जीवन में बदलाव आयेगा और जीवन रोमांचित बनेगा, आगे बढ़ने में इससे मदद मिलेगी। उन्होंने प्रेक्षाध्यान पद्धति को ध्यान की श्रेष्ठ प्रणाली बताते हुये कहा कि विदेशों में भी प्रेक्षाध्यान के प्रशिक्षक तैयार हो रहे हैं। प्रेक्षाध्यान की देश-विदेशों में बहुत चर्चा हुई है। अमेरिका, बेल्जियम आदि देशों से विदेशी लोग यहां जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय में भी प्रेक्षाध्यान व योग सीखने के लिये आते हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय को ए-श्रेणी प्राप्त एक उच्च स्तर का संस्थान बताते हुये कहा कि नैतिक मूल्यों के लिये यह विश्वविद्यालय विख्यात है।

लक्ष्य प्राप्ति के लिये सही दिशा जरूरी

जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने प्रेक्षाध्यान शिविर के तीन दिनों को जीवन को दिशा देने वाला बताया तथा कहा कि गति से अधिक दिशा महत्त्वपूर्ण होती है। अगर दिशा सही नहीं हो तो गति अधिक होने पर भी लक्ष्य प्राप्त नही किया जा सकता। उन्होंने भावक्रिया को ऐसी विधि बताई, जिसमें हर पल व्यक्ति ध्यान में रहता है। प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने इस अवसर पर प्रेक्षाध्यान को महाप्रज्ञ प्रणीत ध्यान की बेजोड़ प्रणाली बताया तथा कहा कि इसे विश्व भर में स्वीकारा गया है। इससे जीवन में बदलाव लाया जाना संभव है। कार्यक्रम का संचालन डा. प्रगति भटनागर ने किया। शिविर में प्रथम सत्र में प्रेक्षाध्यान व योग का अभ्यास पारूल दाधीच व निकिता उत्तम ने करवाया। अंतिम सत्र में प्राचार्य प्रो. त्रिपाठी ने छात्राओं को विश्वविद्यालय के विभागों, पाठ्यक्रमों, व्यवस्थाओं, विशेषताओं आदि की जानकारी दी।

देश को नई दिशा देते हैं शिक्षक- प्रो. त्रिपाठी

शिक्षक दिवस पर छात्राओं ने निभाई शिक्षक की भूमिका, प्रतियोगितायें आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 5 सितम्बर शिक्षक दिवस पर छात्राओं ने स्वयं शिक्षक की भूमिका निभाते हुये आदर्श अध्यापन का प्रस्तुतिकरण किया। इसके अलावा इस अवसर पर भाषण प्रतियोगिता, बधाई कार्ड प्रतियोगिता, प्राचार्य पद चयन प्रतियोगिता आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयोजित इन प्रतियोगिताओं में भाषण प्रतियोगिता में प्रथम दीपिका सोनी, द्वितीय मेहनाज बानो एवं तृतीय सुरैया बानो रही। बधाई कार्ड प्रतियोगिता में प्रथम पूजा शर्मा, द्वितीय सुरैया बानो एवं तृतीय स्थान पर दो छात्राएं क्रमशः आशा स्वामी एवं आरती सिंगारिया रही। प्राचार्य पद चयन प्रतियोगिता में प्रथम वर्ष की छात्रा पूजा प्रजापत को अंतिम रूप से चयनित करते हुए प्राचार्य बनाया गया। इस अवसर पर शिक्षकों के लिये ''पासिंग दी पिलो'' प्रतियोगिता एवं नीम्बू चम्मच दौड़ रखी गयी, जिसमें सोनिका जैन एवं अभिषेक चारण क्रमशः प्रथम स्थान पर रहे। अंत में प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि महाविद्यालय की सभी छात्राओं ने अपने स्तर पर इस कार्यक्रम का आयोजन किया, इसके लिये वे बधाई की पात्र हैं। उन्होंने सर्वपल्ली डा. राधाकृष्ण के जीवन पर प्रकाश डाला तथा शिक्षकों के महत्त्व को बताया।

एनएसएस दिवस मनाया

सेवा से जीवन में ताजगी आती है

संस्थान की राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) की दोनों इकाईयों के संयुक्त तत्वावधान में 24 सितम्बर को एनएसएस दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि सेवा की भावना होने से ही जीवन की सफलता कही जा सकती है। सेवा हमेशा निःस्वार्थ होती है। उन्होंने कहा कि जीवन का महत्त्वपूर्ण गुण गतिशीलता सेवा से आता है। इससे जीवन में झरने की भांति ताजगी और पारदर्शिता रहती है।

डॉ. जुगल किशोर दाधीच ने कहा कि सेवाभाव के जीवन में आने से व्यक्ति सरल, सहज, उदार, करुणामय और सामाजिक बन जाता है। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की एनएसएस इकाई की समन्वयक डा. प्रगति भटनागर ने एनएसएस के स्थापना के समय से लेकर वर्तमान तक की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में स्वयंसेविका माधुरी सोनी ने राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्देश्य, कार्यक्रमों एवं सेवा कार्यों आदि के बारे में विस्तार से जानकारी प्रस्तुत की। प्रारम्भ में सरिता शर्मा ने एनएसएस गीत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर एकल गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें प्रथम स्थान पर अर्चना शर्मा रही। द्वितीय स्थान पर सरिता शर्मा और तृतीय स्थान पर निलोफर व प्रियंका सोनी रही।

भारतीय चिंतन परम्परा की हर धारा में है योग का समावेश

व्याख्यान श्रृंखला

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा है कि वैदिक व श्रमण परम्परायें भारतीय चिंतन परम्परा की दो अलग-अलग धारायें कही जाती हैं, लेकिन दोनों ही परम्पराओं में योग को किसी न किसी रूप में स्वीकार किया गया है। योग का व्यवस्थित चिंतन वैदिक परम्परा में प्रस्तुत किया गया है। श्रमण परम्परा में जैन व बौद्ध दो दर्शन हैं, इनमें से जैन परम्परा में योग को मोक्ष प्राप्ति का आधार बताया गया है और बौद्ध परम्परा में समाधि योग को व्याख्यायित करते हुये अष्टांग मार्ग एवं बौद्धों के षडंग योग को स्पष्ट किया गया है। वे यहां 19 जुलाई को आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में शुरू की गई व्याख्यान-श्रृंखला के शुभारम्भ में ''भारतीय चिंतन परम्परा में योग का स्वरूप'' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत कर रहे थे। उन्होंने इस अवसर पर शिक्षकों द्वारा इस सम्बंध में प्रस्तुत जिज्ञासाओं का समाधान भी किया। क्षेत्र के इस एकमात्र महिला महाविद्यालय में शिक्षा के स्तर को उच्चता दिये जाने के लिये शिक्षकों में अनुसंधान प्रवृत्ति एवं गुणवत्ता की वृद्धि के लिये इस व्याख्यान श्रृंखला की शुरुआत की गई है। इसके अन्तर्गत प्रत्येक 15वें दिन में अलग-अलग विषय पर केन्द्रित व्याख्यान का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें शिक्षक अपने शोधपूर्ण आलेख की प्रस्तुति देते हैं और उस पर सभी शिक्षक मिल कर चिंतन व चर्चा करते हैं।

यहां शिक्षा के साथ लड़कियां सीखती हैं घुड़सवारी भी

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में परिसर के अन्दर प्रत्येक शनिवार को लड़कियां घोड़े पर सवार होने के लिये अपनी बारी का इंतजार करती है। शिक्षणेत्तर गतिविधियों के अन्तर्गत यहां गठित रानी लक्ष्मी बाई क्लब में शामिल लड़कियों को घुड़सवारी सिखाई जाती है। यहां घुड़सवारी में रूचि रखने वाली लड़कियों के लिये घुड़सवारी का प्रशिक्षण निःशुल्क रखा गया है। कुशल प्रशिक्षक हर शनिवार को अपना घोड़ा लेकर यहां आता है और इन लड़कियों को घोड़े पर बैठने से लेकर लगाम थामना, उसे चलाना और दौड़ाना सभी कुछ सिखाया जाता है। इस समय इस महाविद्यालय में पढने वाली कुल 30 लड़कियां रानी लक्ष्मीबाई क्लब में शामिल होकर घुड़सवारी सीख रही हैं।

काफी पसंद कर रही हैं लड़कियां – प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में छात्राओं के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुये संचालित की जाने वाली विविध गतिविधियों में घुड़सवारी को काफी पसंद किया जा रहा है। इस गतिविधि को महाविद्यालय में सतत जारी रखा जायेगा। उन्होंने बताया कि छात्राओं को यहां घुड़सवारी का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिये प्रसिद्ध घुड़सवार अशोक भार्गव की सेवायें ली जा रही है। महाविद्यालय में रानी लक्ष्मी बाई क्लब के प्रभारी अपूर्वा घोड़ावत व योगेश टाक को बनाया गया है।

सारगर्भित हैं कृष्ण की लीलायें

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में भी जन्माष्टमी पर्व के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि कृष्ण को लेकर विश्व भर में सबसे ज्यादा साहित्य की रचना की गई है। कृष्ण की लीलाओं के बहुत ही सारगर्भित अर्थ हैं, उन्हें हर व्यक्ति अपने ही नजरिये से देखता है।

अभिषेक चारण ने कृष्ण के जीवन पर प्रकाश डाला। छात्राओं ने भी कृष्ण के बारे में अपने विचार व्यक्त किये।

उच्च शिक्षा व केरियर निर्माण जागरूकता अभियान के अन्तर्गत विद्यालयों में कार्यक्रमों का आयोजन

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय द्वारा पहल

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय द्वारा युवावर्ग को सही दिशा प्रदान करने के लिये पहल करते हुये अपने केरियर निर्माण एवं उच्च शिक्षा परामर्श कार्यक्रम के तहत दिसम्बर मास में क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को केरियर निर्माण के विभिन्न क्षेत्रों की जानकारी दी गई और उन्हें उनके अध्ययन के अनुकूल परामर्श प्रदान किया गया तथा उच्च शिक्षा प्राप्त करने के सम्बंध में भी उनका मार्गदर्शन किया गया। यहां के राजकीय भूतोड़िया बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, राजकीय केशरदेवी सेठी बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, लाड मनोहर बालनिकेतन उच्च माध्यमिक विद्यालय, विमल विद्या विहार उच्च माध्यमिक विद्यालय, संस्कार उच्च माध्यमिक विद्यालय, आदर्श विद्या मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय, कनकश्याम उच्च माध्यमिक विद्यालय, सेंट जेवियर्स पब्लिक स्कूल, सुभाष बोस शिक्षण संस्थान, सत्यम उच्च मा. विद्यालय, सैनिक वेलफेयर स्कूल, मौलाना आजाद स्कूल, मदनलाल भंवरीदेवी आर्य मेमोरियल स्कूल, दयानन्द सरस्वती स्कूल, निम्बी जोधां के नवभारत स्कूल, आदर्श विद्या मंदिर स्कूल, नवीन विद्यापीठ स्कूल, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय व स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल में डा. प्रगति भटनागर, सोनिका जैन, डा. बलवीर चारण, डा. रत्ना चौधरी, दिव्या राठौड़, अभिषेक चारण व सोमवीर सांगवान ने अलग-अलग विद्यालयों का जिम्मा लेकर कैरियर निर्माण एवं उच्च शिक्षा जागरूकता के कार्यक्रमों का आयोजन किया तथा विद्यार्थियों में उच्च शिक्षा के प्रति एवं केरियर के सम्बंध में जानकारी प्रदान की।

बैठक आयोजित कर दिये निर्देश

इससे पूर्व प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने अपने आचार्यगणों की एक बैठक का आयोजन करके युवा वर्ग में उच्च शिक्षा व केरियर के प्रति जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता बताई तथा इसके लिये क्षेत्र में एक अभियान चलाया जाकर विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करने के कार्यक्रम को अंतिम रूप दिया। प्रो. त्रिपाठी ने बताया कि आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय निरन्तर विद्यार्थी जागरूकता की दिशा में कार्य कर रहा है। इसके तहत समय-समय पर विभिन्न विषयों पर व्याख्यान आयोजित करने, अनेक प्रकार की सांस्कृतिक-साहित्यिक व खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन करने, घुड़सवारी प्रशिक्षण प्रदान करने, युवा महोत्सव व मेलों का आयोजन करने, प्रतियोगी परीक्षाओं के लिये ज्ञान केन्द्र का संचालन करने, ज्ञान व कौशल वृद्धि के लिये विविध क्लबों का संचालन करने आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता रहता है।

गरबा में होती है नारी शक्ति की भावनायें अभिव्यक्त

गरबा नृत्य का शानदार आयोजन, मुस्कान समूह रहा प्रथम विजेता

संस्थान में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं कैरियर काउंसलिंग सेल के संयुक्त तत्वावधान में नवरात्रा के अवसर पर 14 अक्टूबर को विश्वविद्यालय परिसर में डांडिया नृत्य (गरबा) का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में शहर भर की महिलाओं की भीड़ उमड़ी। श्रीमती कनक दूगड़ की अध्यक्षता में आयोजित इस गरबा नृत्य कार्यक्रम में अंजू बैद मुख्य अतिथि थी।

कुलसचिव कक्कड़ ने इस अवसर पर अपने सम्बोधन में कहा कि हमारी सांस्कृतिक विरासत को हम स्वयं उस पर अमल करके ही संभाल सकते हैं। नवरात्रा का पर्व पवित्रता के साथ महिला शक्ति का समर्थक पर्व है, जिसमें नारी को शक्ति का रूप मान कर उसकी पूजा किये जाने का विधान है। गरबा नृत्य में महिलायें उन्मुक्त रूप से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करती हैं, लेकिन मर्यादित स्वरूप में ही। यही इस पर्व की विशेषता है। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने गरबा को नारी-गौरव का प्रतीक बताया तथा कहा कि गरबा में नृत्य की कला के साथ विभिन्न भाव-भंगिमायें नारी के महत्व को प्रतिपादित करती है। उन्होंने अतिथियों का स्वागत करते हुये विश्वविद्यालय में हर साल होने वाले गरबा कार्यक्रम के बारे में बताया। कैरियर काउंसलिंग सेल के समन्वयक डा. जुगलकिशोर दाधीच ने बताया कि विभिन्न पारम्परिक वेशभूषा में सजी-धजी छात्राओं के सभी दस समूहों के गरबा नाच के अलावा कार्यक्रम में समागत अभिभावकों ने भी अपने गरबा नृत्य का प्रस्तुतिकरण सामूहिक रूप से किया।

दस समूहों ने किया गरबा नृत्य- कार्यक्रम में गरबा में भाग लेने वाली छात्राओं के 10 समूह गठित किये गये। इन समूहों द्वारा बारी-बारी से गरबा नृत्यों का प्रदर्शन किया, जिनके आधार पर मूल्यांकन करके विजेता घोषित किय गये। इनमें प्रथम स्थान पर मुस्कान एवं समूह रहा। इस समूह में महिमा, योगिता, सृष्टि, कीमती, स्नेहा, मुस्कान, रश्मि व मानसी शामिल थी। द्वितीय स्थान पर ताम्बी एवं समूह रहा, जिसमें ताम्बी, ज्योति, मधु, जयश्री, नीतू, सरिता, विमला व कीर्ति शामिल थी। तृतीय स्थान पर दीप्ति एवं समूह रहा, जिसमें छात्रा दीप्ति, वसुंधरा, तब्बसुम, यास्मीन, निलोफर, किरण, रेहाना व कोमल शामिल थी। विजेता रहे सभी समूहों की छात्राओं को कार्यक्रम के अंत में पुरस्कार प्रदान किये गये। इन छात्राओं के अलावा अभिभावकों में से गरबा खेलने वालों को विशिष्ट पुरस्कार भी प्रदान किये गये, जिनमें सुजानगढ के सुरेश, सोनिका जैन व रश्मि बोकड़िया को पुरस्कृत किया गया।

पंथ-मजहब की सीमाओं को लांघ चुका है रक्षाबंधन- प्रो. त्रिपाठी

रक्षाबंधन पर छात्राओं ने लिया संकल्प कि वे अपने सास-श्वसुर को कभी वृद्धाश्रम नहीं जाने देंगी

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में रक्षाबंधन पर्व 25 अगस्त को समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि राखी का त्यौहार जहां भाई व बहिन के पवित्र रिश्ते का स्मरण करवाता है, वहीं यह पर्व देश के साहित्य एवं संस्कृति की रक्षा का संदेश भी देता है। उन्होंने रक्षाबंधन को पंथ और मजहब के दायरे से हटकर त्यौहार बताते हुये कहा कि इतिहास में हुमायूं व रानी कर्मावती इसकी मिशाल है।

कार्यक्रम में अभिषेक चारण ने एक कविता के माध्यम से भाई-बहिनों के संवेदनात्मक सम्बंधों को प्रकट किया। छात्रा भगवती निठारवाल ने इस अवसर पर सभी छात्राओं को संकल्प दिलवाया कि वे इस पर्व पर शपथ ग्रहण करें कि वे अपने सास-श्वसुर को कभी भी वृद्धाश्रम नहीं जाने देंगी तथा उनकी सेवा में वे कोई कसर नहीं रहने देंगी। छात्रा मेहनाज बानो ने बताया कि इस त्यौहार को हिन्दू-मुस्लिम सभी मनाते हैं। जब भी रक्षाबंधन आता है तो उसकी मां भी अपने दिवंगत भाई का स्मरण करके आंखों में पानी भर लेती है। छात्रा हेमलता ने औपचारितायें निभाने के बजाय पर्व को दिल की गहराईयों से उसके मर्म को समझते हुये मनाये जाने की अपील की। कार्यक्रम का संचालन छात्रा सरिता शर्मा ने किया।

''स्वच्छता ही सेवा'' अभियान का शुभारम्भ

स्वच्छता को जन आंदोलन बनाया जाना जरूरी

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) की दोनों इकाईयों के अन्तर्गत 15 सितम्बर को यहां स्वच्छता ही सेवा-2018 अभियान का शुभारम्भ किया गया। शुभारम्भ कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने स्वच्छता के महत्त्व को बताते हुये कहा कि स्वच्छ भारत मिशन की चौथी वर्षगांठ एवं महात्मा गांधी के 150वें जयंती महोत्सव के अवसर पर स्वच्छता ही सेवा अभियान आगामी 2 अक्टूबर तक एन.एस.एस. के तत्वावधान में चलाया जायेगा। इस अभियान का लक्ष्य प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के स्वच्छ भारत के विजन को जन-आंदोलन के रूप में विकसित करने का है।

उन्होंने बताया कि इस अभियान के अन्तर्गत जनमानस में सफाई के प्रति नजरिये व व्यवहार को बदलने के लिये घर-घर तक पहुंच कर प्रेरित किया जायेगा। स्वच्छता को लेकर जन-जागरण के लिये नुक्कड़ नाटक, स्ट्रीट प्ले, लोकगीतों एवं लोकनृत्यों आदि का आयोजन करना, हर घर से कचरा संग्रहण, गलियां, नालियां एवं अन्य स्वच्छता की मोनिटरिंग करने के साथ गांवों एवं विद्यालयों द्वारा रैली निकाली गयी। सफाई के प्रति जागरूकता पैदा करने, सार्वजनिक स्थानों पर दीवार-लेखन करने आदि अनेक कार्यक्रम एनएसएस के स्वयंसेवकों द्वारा सम्पन्न करवाये जायेंगे। कार्यक्रम का संचालन प्रभारी डा. प्रगति भटनागर ने किया।

बाल दिवस पर किया नेहरू को याद

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के जन्मदिवस 14 नवम्बर को बालदिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में हुये इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डा. जुगलकिशोर दाधीच ने बताया कि पं. नेहरू हमेशा भविष्य की ओर देखते थे। इसी कारण उन्हें नई पीढ़ी से बेहद लगाव था। वे चाहते थे कि शिक्षा का प्रसार हो और उच्च शिक्षा के लिये अधिक संख्या में छात्र आगे आयें। व्याख्याता अभिषेक चारण ने नेहरू के राजस्थान दौरे व यहां विपरीत परिस्थितियों के बावजूद शिक्षा की ललक से ली गई प्रेरणा के बारे में बताया। कार्यक्रम में छात्रा रश्मि बोकड़िया व करिश्मा खान ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

सावन के पहले दिन छात्राओं ने किया वृक्षारोपण

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के तत्त्वावधान में 28 जुलाई को सावन मास के प्रथम दिवस पर विश्वविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी के नेतृत्व में आयोजित इस कार्यक्रम में बिल्व, नीम्बू, अनार, गुलाब आदि विभिन्न पौधों को लगाया गया। पौधों की व्यवस्था छात्राध्यापिकाओं ने स्वयं के स्तर पर की। इस अवसर पर प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि पेड़ लगाने का एक स्वतः स्फूर्त आंदोलन होना चाहिये। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन, अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डा. जुगल किशोर दाधीच, दूरस्थ शिक्षा की उपनिदेशक नुपूर जैन, डा. प्रगति भटनागर, कमल मोदी, मधुकर दाधीच, सोनिका जैन, अभिषेक चारण, सोमवीर, बलवीर, रत्ना चौधरी आदि इस अवसर पर उपस्थित थे।

गुरु शिष्य का निर्माणकर्त्ता

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 27 जुलाई को गुरु पूर्णिमा पर्व पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुये प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि महर्षि वेदव्यास के जन्मजयन्ती के उपलक्ष्य में गुरु पूर्णिमा पर्व मनाया जाता है। वैसे पुराणों में भगवान शिव को आदि गुरु माना गया है। उन्होंने शनि और परशुराम को शिष्य के रूप में शिक्षा दी थी, इसलिये उन्हें आदि गुरु माना गया है। उन्होंने बताया कि भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य की बहुत ही उज्ज्वल परम्परा रही है। शंकराचार्य को भी उनके गुरु गौड़पाद ने बनाया था। रामबोला को तुलसीदास गुरु नरहरिदास ने बनाया था तथा शिवाजी प्रसिद्ध हुए अपने गुरु रामदास की शिक्षा के कारण। विवेकानन्द को भी उनके गुरु रामकृष्ण ने बनाया था। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि निर्मल भावों से गुरु का आदर और सम्मान करना चाहिए। इस अवसर पर अभिषेक चारण द्वारा आदिकाल से आधुनिक काल तक गुरु के महत्त्व को व्याख्यायित किया गया। कार्यक्रम का संचालन सोमवीर सांगवान द्वारा किया गया।

हिन्दी साहित्यकारों के नामों पर अंताक्षरी

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में हिन्दी दिवस के उपलक्ष में 13 सितम्बर को छात्राओं ने हिन्दी साहित्यकारों के नामों पर आधारित अंताक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया। इस प्रतियोगिता में 30-30 छात्राओं के समूह बनाकर उनमें प्रतिद्वंद्विता करवाई गई। प्रतियोगिता में निरमा प्रजापत एवं समूह विजेता रहा। द्वितीय स्थान पर प्रीति भूतोड़िया एवं समूह रहा। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने हिन्दी को उत्तर से दक्षिण तक मान्य भाषा बनाने की आवश्यकता बताते हुये कहा कि इसके लिये व्यापक अभियान चलाया जाना चाहिये। सोमवीर सांगवान ने हिन्दी को व्यावसायिक एवं शैक्षणिक स्तर पर विभिन्न विश्वविद्यालयों में अपनाये जाने की आवश्यकता बताई। अभिषेक चारण ने बताया कि हिन्दी हमेशा समृद्ध भाषा रही है और इसमें अकूत साहित्य की रचना हुई है। प्रसिद्ध अंग्रेज विद्वानों ने यहां की प्रसिद्ध हिन्दी पुस्तकों के माध्यम से हिन्दी को सीखा था। कार्यक्रम में कुसुम नाई, महिमा प्रजापत, रश्मि बोकड़िया, भगवती निठारवाल, सरिता शर्मा व सुरैया बानो ने भी विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन कंचन स्वामी ने किया।

रैली निकाल कर दिया जागरूकता का संदेश

राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) की दोनों इकाइयों की स्वयंसेविकाओं ने जन-जागरूकता रैली का आयोजन किया। रैली में छात्राओं ने विविध नारे लिखी तख्तियां लेकर एवं नारे लगाते हुये महात्मा गांधी के संदेशों को आम जन तक पहुंचाया। रैली को मंगलवार को प्रातः विश्वविद्यालय परिसर से आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। इस अवसर पर प्रो. अनिल धर, डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, डा. जुगल किशोर दाधीच, डा. प्रगति भटनागर, सोनिका जैन आदि उपस्थित रही। एन.एस.एस. ने गत 15 सितम्बर से एक पखवाड़े का आयोजन करके विविध कार्यक्रमों व प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। इनमें सम्पूर्ण परिसर की साफ-सफाई, स्वच्छता से सम्बद्ध प्रतियागिताओं में निबंध लेखन, गायन व पोस्टर प्रतियोगिता शामिल थी। मंगलवार को गांधी जयंती के अवसर पर विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। निबंध प्रतियोगिता में प्रथम सरिता शर्मा, द्वितीय महिमा प्रजापत व तृतीय नर्मदा धेतरवाल रही। पोस्टर प्रतियोगिता में मनोज दुसाद प्रथम एवं बीनू द्वितीय रही। गायन में अर्चना शर्मा प्रथम, निलोफर व प्रियंका सोनी द्वितीय तथा सरिता शर्मा तृतीय रही। एन.एस.एस. की समस्त छात्राओं को स्वच्छता की डॉक्यमेंटरी फिल्म दिखाई गई। पुरस्कार वितरण समारोह की अध्यक्षता आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने की। मुख्य अतिथि जगदीश यायावर थे। कार्यक्रम का संचालन डा. जुगल किशोर दाधीच व डा. प्रगति भटनागर ने किया।

प्रतियोगिताओं का आयोजन

विश्वविद्यालय में महात्मा गांधी जयंती के 150वें जयंती उत्सव के तत्त्वावधान में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इनमें भजन प्रतियोगिता में 28 प्रतिभागी छात्राओं ने भाग लिया, जिनमें से प्रथम स्थान पर पूजा कुमारी रही। द्वितीय स्थान पर मुमुक्षु आरती व तृतीय स्थान पर मुमुक्षु सारिका रही। नाटक प्रतियोगिता में सम्भागी रहे 20 प्रतिभागियों में से रश्मि एवं समूह ने प्रथम स्थान और नन्दिनी एवं समूह ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। पोस्टर प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय की कुल 23 विद्यार्थी प्रतिभागी रही, जिनमें से प्रथम स्थान पर मनोज, द्वितीय किरण एवं तृतीय रीतिका दाधीच व प्रीति फुलफगर रही। स्लोगन प्रतियोगिता में 13 प्रतिभागियों में से पहले स्थान पर यास्मीन बानो, द्वितीय पारस जैन व तृतीय स्थान पर रूचिका दाधीच व रीतिका दाधीच रही।

छात्राओं व शिक्षकों ने मिल कर की सफाई

विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग के तत्त्वावधान में स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें विभाग के विभिन्न परिसरों की साफ-सफाई का विभाग के शिक्षकों डा. मनीष भटनागर, डा. भावाग्रही प्रधान, डा. विष्णु कुमार, डा. सरोज राय, डा. गिरीराज भोजक, डा. गिरधारी लाल शर्मा, दिव्या राठौड़, मुकुल सारस्वत आदि ने छात्राओं के साथ मिलकर सफाई-कार्य में अपना श्रमदान किया।

पुल बनाने का काम करें- राजेश चैतन्य

विख्यात कवि राजेश चैतन्य का विश्वविद्यालय में स्वागत

विख्यात राष्ट्रीय एवं हास्य कवि राजेश चैतन्य का यहां जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) की ओर से महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में 20 अगस्त को भावभीना स्वागत किया गया। वे यहां मुनिश्री जयकुमार के दर्शनार्थ लाडनूं आये थे। इस अवसर पर राजेश चैतन्य ने विभिन्न हास्य आधारित एवं प्रेरणास्पद कविताओं एवं चुटकलों से भरपूर तालियां बटोरी। उन्होंने कहा कि हंसने का अधिकार समस्त प्राणियों में केवल मनुष्य को ही भगवान ने दिया है, इसलिये सभी मनहूसियत छोड़ कर हंसी-खुशी से जिन्दगी गुजारें। उन्होंने इंसान-इंसान के बीच दीवारें बनानी छोड़ देने और पुल बनाने का काम करने की सलाह दी तथा कहा कि सारा खेल केवल शब्दों का है। शब्द-सम्पदा के प्रयोग से खुशियां बांटी जा सकती है और दुःख भी उत्पन्न किया जा सकता है।

आनन्द है जीवन का आधार

कार्यक्रम को सान्निध्य प्रदान करते हुये मुनिश्री जयकुमार ने स्वरचित कवितायें सुनाई, जिन्हें सभी ने जमकर सराहा। मुनिश्री ने कहा कि आनन्द जीवन का आधार है। जीवन में हंसना-हंसाना और आनन्दित रहना आवश्यक है। उन्होंने शब्दों से आनन्द की उत्पति के बारे में बताया। प्रारम्भ में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कवि राजेश चैतन्य का स्वागत किया तथा उनकी काव्य-रचनाओं को उद्धृत करते हुये उनका परिचय प्रस्तुत किया। प्रो. दूगड़ ने उन्हें मोस्ट डायनेमिक पोईट की उपाधि देते हुये कहा कि वे केवल बेहतरीन मंच संचालक, कवि व मोटीवेशनल गुरू ही नहीं, बल्कि विभिन्न संस्थाओं के संचालक भी हैं और समाज सेवा से निरन्तर जुड़े हुये रहते हैं। कार्यक्रम में अतिथियों के रूप में शांतिलाल बरमेचा व इन्द्रचंद बैंगाणी भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने किया।

स्वतंत्रता दिवस समारोह मनाया

संस्थान में स्वतंत्रता दिवस पर्व 15 अगस्त को समारोहपूर्वक मनाया गया। दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयोजित इस समारोह में कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने झंडारोहण किया। संस्थान की एन.सी.सी. की केडेट्स ने मार्च-पास्ट किया और झंडे को सलामी दी। कार्यक्रम में कुलसचिव कक्कड़ ने आजादी की लड़ाई का स्मरण किया और वीरों के बलिदान का उल्लेख किया। प्रो. त्रिपाठी ने अध्यक्षीय सम्बोधन में देश की आजादी, स्वाभिमान और अतीत के गौरव की रक्षा करने आवश्यकता बताई। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करके देशभक्ति का जज्बा जगाया। इस अवसर पर प्रो. दामोदर शास्त्री, प्रो. बी.एल. जैन, आर.के. जैन, डा. योगेश कुमार जैन, डा. विजेन्द्र प्रधान, डा. जुगलकिशोर दाधीच, डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, दीपाराम खोजा आदि उपस्थित थे।

अज्ञान मिटा कर ज्ञान का दीप जलाने वाला ही गुरू- मुनि जयकुमार

गुरू पूर्णिमा कार्यक्रम

मुनिश्री जयकुमार ने कहा है कि जो भीतर की गुरुता को, अन्तर की चेतना को और विवेक को जागृत करे वही गुरु होता है। वे यहां संस्थान के महाप्रज्ञ सभागार में नियमित ध्यान व प्रार्थना के पश्चात 27 जुलाई को गुरु पूर्णिमा पर्व पर समस्त स्टाफ को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि गुरु की पहचान यह है कि वह अज्ञान को खत्म करता है, भीतर में ज्ञान के दीप को प्रज्ज्वलित करता है। गुरु अच्छे मार्ग को प्रशस्त करता है और करणीय व अकरणीय कर्म के विवेक को जागृत करता है। इससे पूर्व मुनिश्री ने सबको गहरे ध्यान के प्रयोग करवाये। इस

अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़, उप कुलसचिव डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, दीपाराम खोजा, डा. बी. प्रधान, विजयकुमार शर्मा, प्रो. रेखा तिवाड़ी, डा. विकास शर्मा, डा. अशोक भास्कर आदि उपस्थित थे।

शिक्षा विभाग में मनाई गुरू पूर्णिमा

इसके अलावा विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में भी गुरु पूर्णिमा पर्व मनाया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने इस अवसर पर कहा कि गुरु के विचारों को आत्मसात करें, वे हमारे संकटों में पाथेय प्रदान करेंगे। डा. आभासिंह, छात्राध्यापिका कंचन कंवर, सरिता फिरौदा, पल्लवी, अंजलि, पूजा गौड़ आदि ने भी अपने विचार कविता, भाषण व कहानी के रूप में व्यक्त किये।

विश्वविद्यालय को मिला दर्शन के क्षेत्र में सर्वोच्च सम्मान

अखिल भारतीय दर्शन परिषद ने दर्शन एवं दर्शन की विभिन्न शाखाओं के अन्तर्गत प्रसार, विकास एवं शोध सम्बंधी अद्वितीय कार्य करने के उपलक्ष में जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) को वर्ष 2018 का डॉ. श्रीप्रकाश दुबे स्मृति राष्ट्रीय दर्शन पुरस्कार प्रदान किया गया है। यह राष्ट्रीय पुरस्कार विश्वविद्यालय को लखनऊ में आयोजित दर्शन परिषद के 63वें अधिवेशन के उद्घाटन सत्र में 22 अक्टूबर को प्रदान किया गया। इस समारोह में राज्यसभा सांसद डा. अशोक वाजपेयी के मुख्य आतिथ्य एवं लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एसपी सिंह की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। समारोह में जैविभा विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि के रूप में दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने ग्रहण किया। डा. श्रीप्रकाश दुबे राष्ट्रीय दर्शन पुरस्कार के संयोजक पंकज दुबे ने इस अवसर पर बताया कि दर्शन जगत के ख्यातनाम व्यक्तित्व एसपी दुबे की स्मृति में दिया जाता है। जो शिक्षण संस्था दर्शन के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करती है है, उन्हें इससे नवाजा जाता है। यह दर्शन क्षेत्र का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार है। राष्ट्रीय पुरस्कार निर्णायक समिति ने दर्शन विषय के उन्नयन के लिये जैन विश्व भारती संस्थान को 2018 के पुरस्कार के लिये चयन किया। अखिल भारतीय दर्शन परिषद का दर्शन के क्षेत्र में यह विशेष पुरस्कार इससे पूर्व वाराणसी हिन्दू विश्वविद्यालय जैसे प्रतिष्ठित केन्द्रीय विश्वविद्यालय को दिया जा चुका है।

आचार्य महाप्रज्ञ का 99वां जन्मदिवस मनाया

जो सहता है वही रहता है- प्रो. दूगड़

संस्थान के द्वितीय अनुशास्ता एवं तेरापंथ धर्मसंघ के दसवें आचार्यश्री महाप्रज्ञ की 99वीं जयंती 11 जुलाई को यहां सेमिनार हॉल में आयोजित कार्यक्रम में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन के उद्धरण व संस्मरण प्रस्तुत करते हुये कहा कि व्यक्ति में सहनशीलता का गुण आवश्यक है, क्योंकि यह सर्वमान्य तथ्य है कि जो सहता है, वही रहता है। सहन नहीं करने पर नुकसान ही होता है तथा अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिये सहने की प्रवृत्ति आवश्यक है। उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ की मेधाशक्ति का जिक्र करते हुये कहा कि वे संस्कृत, प्राकृत व हिन्दी ही जानते थे, अंग्रेजी नहीं, लेकिन जब उन्होंने अंग्रेजी की व्यापकता को देखा तो ऑक्सफोर्ड डिक्सनरी को पूरा कंठस्थ कर लिया। इस अवसर पर उन्होंने अनुशास्ता की देन को प्रस्तुत किया तथा बताया कि वे जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय को जैन विद्या का केन्द्र बनाना चाहते थे। हमें इस चुनौती को स्वीकार करते हुये उसी दिशा में प्रयत्न करने चाहिये तथा जैन-स्कॉलर बनाने की दिशा में कार्य करना चाहिये। कार्यक्रम में दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, शोध निदेशक प्रो. अनिल धर व शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने भी विचार व्यक्त किये। अंत में विश्वविद्यालय के कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने धन्यवाद ज्ञापित किया। डॉ. योगेश कुमार जैन ने कार्यक्रम का संचालन किया।

विश्वविद्यालय में कार्मिकों के लिये नियमित ध्यान का कार्यक्रम

पूर्ण चैतन्य के लिये जरूरी है प्रेक्षाध्यान- मुनि जयकुमार

संस्थान के महाप्रज्ञ सभागार में 25 जुलाई को मुनिश्री जयकुमार ने कहा कि ध्यान से व्यक्ति शारीरिक, मानसिक व भावात्मक रूप से स्वस्थ बनता है। इसमें कायोत्सर्ग, श्वास प्रेक्षा, अनुप्रेक्षा आदि विधियां व्यक्ति को पूर्ण चेतन बनाने में महत्वपूर्ण होती हैं। उन्होंने कहा कि अगर इस विधि से प्रतिदिन नियमित रूप से ध्यान किया जाये, तो जीवन में बदलाव आ सकते हैं। वे विश्वविद्यालय के स्टाफ को नियमित ध्यान करवा रहे थे। उन्होंने विधिपूर्वक सबको प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करवाया। विश्वविद्यालय में नियमित रूप से चलने वाले ध्यान व प्रार्थना का यह कार्यक्रम कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशानुसार मुनिश्री जयकुमार के सान्निध्य में शुरू किया गया है। उन्होंने हर माह 15 दिन स्वयं उपस्थित रह कर विश्वविद्यालय के शैक्षणिक व शिक्षणेत्तर कार्मिकों को ध्यान करवाया एवं सबको ध्यान का महत्व समझाया। विश्वविद्यालय स्टाफ ने इसे अभिनव कार्यक्रम बताया है।

विश्व के अस्तित्व की सुरक्षा भारतीय संस्कृति से ही संभव- डॉ. गुप्ता

भारतीय संस्कृति का भविष्य विषयक व्याख्यान आयोजित

संस्थान की महादेवलाल सरावगी अनेकांत शोधपीठ के तत्वावधान में आचार्य तुलसी श्रुत-संवर्द्धिनी व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 24 सितम्बर को यहां महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में ''भारतीय संस्कृति का भविष्य'' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुनिश्री जयकुमार के सान्निध्य में आयोजित इस व्याख्यान कार्यक्रम में व्याख्यानकर्ता आर.एस.एस. के उत्तर क्षेत्र संघचालक डा. बजरंगलाल गुप्ता ने कहा कि भारतीय संस्कृति से ही यह देश सुरक्षित है। केवल भौतिक रूप से अस्तित्व अलग है, लेकिन असली पहचान संस्कृति से ही होती है। उन्होंने भारतीय संस्कृति के लिये कहा कि यह पुरातन है, लेकिन नित्य नूतन भी है। यह सनातन, शाश्वत, चिरन्तन है और निरन्तर विकासमान, नैतिक मूल्यों का प्रवाह है। यहां हर युग में मनीषी व आचार्य होते आये हैं और इसे सदैव नवीनता प्रदान करते रहे हैं। डा. गुप्ता ने कहा कि भारतीय संस्कृति प्रकृति को मातृत्व व देवत्व के रूप में लिया जाता है, जबकि पश्चिमी संस्कृति में प्रकृति को दासी स्वरूप में लेकर उसका उपयोग करते हैं। हम प्रकृति का शोषण नहीं, बल्कि दोहन करते हैं, लेकिन इसमें देने व लेने का क्रम नहीं टूटने देते। देश को बदलने के लिये नौजवान आगे आयें।

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेशाध्यक्ष सांसद मदनलाल सैनी ने इस अवसर पर कहा कि भारतीय संस्कृति अनेक विशेषताओं वाली संस्कृति है। यहां सामाजिक दायित्वों के बारे में व्यक्ति जिम्मेदार होता है और उस व्यक्ति के लिये समाज खड़ा हो जाता है। उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुये कहा कि आज देश को तोड़ने वाली शक्तियां सक्रिय हैं। आतंकवाद को पैसा और पनाह देने वालों से सावधान रहने की आवश्यकता है। उन्होंने आचार्य तुलसी प्रणीत अणुव्रतों का उल्लेख करते हुये कहा कि उनके द्वारा दिखाई गई दिशा को अगर थोड़ा सा भी ग्रहण किया जावे तो जीवन में बदलाव लाया जा सकता है। व्याख्यानमाला को सान्निध्य प्रदान करते हुये मुनिश्री जयकुमार ने कहा कि हमारी संस्कृति अतीत, वर्तमान व अनागत तीनों को समाहित रखती है। यह संस्कृति कभी समाप्त नहीं हो सकती। इसमें परिवर्तन, परिवर्द्धन व परिशोधन की संभावना हमेशा रहती है। जहां अनाग्रह पूर्वक परिवर्तन की प्रक्रिया चलती है, उसे कोई नष्ट नहीं कर सकता है। हमारी संस्कृति मिलन की, साथ बैठने की, साथ चिंतन करने की और साथ में निर्णय लेने की संस्कृति है।

जहां कर्मवाद और पुरूषार्थवाद हो वहां निराशा नहीं आती

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि भारतीय संस्कृति का आधार धर्म है। धर्म शाश्वत है इसलिये भारतीय संस्कृति भी शाश्वत है। इस संस्कृति में सुव्यवस्था है। चाहे आश्रमवाद हो, कर्मवाद व पुनर्जन्मवाद हो, यह व्यवस्था निरन्तर संस्कृति को पोषण देती है और विकसित करती है। त्याग, धैर्य और संतुलन जिस संस्कृति में समाविष्ट हो, वह संस्कृति कभी काल-कवलित नहीं हो सकती है। प्रारम्भ में दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने व्याख्यानमाला की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा अतिथियों का परिचय प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में जैन विश्व भारती के मुख्य ट्रस्टी भागचंद बरड़िया व जीवनमल मालू विशिष्ट अतिथि के रूप में मंचस्थ थे। इस अवसर पर प्रभारी डा. योगेश कुमार जैन, रजिस्ट्रार विनोद कुमार कक्कड़, उपकुलसचिव डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, शोध निदेशक प्रो. अनिल धर, प्रो. दामोदर शास्त्री, प्रो. बीएल जैन, डा. जुगल किशोर दाधीच, डा. गोविन्द सारस्वत, डा. बिजेन्द्र प्रधान, हरीश शर्मा, अशोक सुराणा, सागरमल नाहटा आदि उपस्थित थे।

खमत-खामना पर्व पर शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने किया क्षमा का आदान-प्रदान

देश भर में नैतिक मूल्यों की शिक्षा के लिये विख्यात जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) में 15 सितम्बर को खमत-खामणा पर्व को समारोह पूर्वक मनाया गया। समारोह में विश्वविद्यालय के समस्त विभागों के विभागाध्यक्षों एवं अन्य स्टाफ द्वारा परस्पर एक साल की अवधि में किसी को भी अपने कार्य, वाणी या मन से पीड़ा पहुंचाई हो तो उसके लिये क्षमा याचना की और भविष्य में ध्यान रखने का संकल्प व्यक्त किया। समारोह की अध्यक्षता करते हुये दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि क्षमा करना व क्षमा मांगना वीरों का कार्य होता है। क्षमा अहंकार जनित नहीं होनी चाहिये। क्षमा याचना करते समय मन से, शरीर से क्षमा का भाव भी प्रकट होना चाहिये। उन्होंने कहा कि बीते साल की भूलों के लिये क्षमा मांगने के साथ यह भी आवश्यक है कि भविष्य में गलती नहीं होने पाये।

पारिवारिक जीवन में भी क्षमा आवश्यक

विश्वविद्यालय के कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने कहा कि क्षमा मांगने से और क्षमा करने से दोनों तरफ मन की मलिनता दूर हो जाती है। शोध निदेशक प्रो. अनिल धर ने कहा कि हमें सार्वजनिक जीवन में ही नहीं, बल्कि अपने पारिवारिक जीवन में भी क्षमा मांगने की शुरूआत करनी चाहिये। क्षमा से सहने की शक्ति बढ़ती है और हमें सामर्थ्यवान बनाती है। प्रो. रेखा तिवाड़ी ने कहा कि किसी के मन को पीड़ा पहुंची हो तो उसके लिये प्रायश्चित्त करने के लिये उससे क्षमा मांगना सबसे अच्छा है। वित्ताधिकारी आर.के. जैन ने क्षमा को वीरों का भूषण बताते हुये कहा कि हमें केवल साल में एक बार नहीं बल्कि गलती होते ही क्षमा मांग लेनी चाहिये। समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान ने क्षमापना पर्व को सहयोग व सद्भावना बढ़ाने का सुअवसर बताया। छात्रा सरिता शर्मा, ऋतु स्वामी ने भी इस समारोह में क्षमा याचना पर अभिव्यक्ति दी। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने समारोह के प्रारम्भ में क्षमापर्व के बारे में जानकारी दी और एक कविता के माध्यम से अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी।

गांधी के सिद्धांतों पर आधारित नाटक व भजन प्रतियोगिता का आयोजन

महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर गांधी के सिद्धांतों पर आधारित नाटक एवं भजन प्रतियोगिता का आयोजन 24 अगस्त को किया गया। छात्रा सरिता शर्मा व मुमुक्षु अंकिता ने ''दे दी हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढाल, साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल'' ने ऑडिटोरियम में उपस्थित समस्त दर्शकों पर प्रभाव डाला। भावना भाटी, रितु स्वामी व नेहा पारीक ने महात्मा गांधी के प्रिय भजन ''वैष्णव जन तो तैंने कहिये, जे पीर पराई जाणें रे'' का गान करके सबको भक्ति विभोर कर दिया। ममता स्वामी ने ''रघुपति राघव राजा राम, तित पावन सीता राम' का गान किया। नीतू जोशी ने ''कलियुग बैठा मार कुंडली, जावूं तो कहां जावूं, अब हर घर में रावण बैठा, इतने राम कहां से लावूं'' सुनाकर तालियां बटोरी। मीनू रोड़ा ने ''ओ पालन हारे, निर्गुण और न्यारे, तुमरे बिनु हमरा कौनु नहीं'' का सस्वर पाठ किया। विपुल जैन ने ''अहंकार का भाव न रखूं, नहीं किसी पर क्रोध करूं'' सुनाई।

वाणी में संयम व चरित्र पर काबू जरूरी

प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर दामोदर शास्त्री ने मनुष्य को अपनी वाणी में संयम एवं अपने चरित्र पर काबू पाने की आवश्यकता बताई। नाटक प्रस्तुतियों में अम्बिका एवं समूह ने महात्मा गांधी के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं से लेकर उनके मृत्योपरांत तक के घटनाक्रम का नाट्य-रूपांतरण पेश किया। आरती एवं समूह ने बापू की संतान नामक नाटक में अदालत में पर्यावरण का संकट प्रस्तुत किया, जिसमें जल, पहाड़, पेड़ व धरती की गवाही लगाई गई।

मीनू रोड़ा रही प्रथम

सांस्कृतिक समिति की समन्वयक डा. अमिता जैन ने प्रतियोगिता के परिणामों की घोषणा करते हुये बताया कि भजन गायन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर मीनू रोड़ा एवं द्वितीय स्थान पर ममता स्वामी रही। तृतीय स्थान पर मुमुक्षु अंकिता रही। नाटक मंचन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर मुमुक्षु आरती एवं समूह तथा द्वितीय स्थान पर अम्बिका एवं समूह रहा। कार्यक्रम में रितु स्वामी, नेहा पारीक, सरिता शर्मा, ममता स्वामी, विपुल जैन, नीतू जोशी, मीनू रोड़ा, भावना भाटी व मुमुक्षु अंकिता ने महात्मा गांधी पर आधारित अनेक भजनों की प्रस्तुतियां देकर वातावरण को महात्मा गांधीमय बना दिया। अंत में आभार ज्ञापन डा. अमिता जैन ने किया। कार्यक्रम का संचालन डा. सत्यनारायण भारद्वाज व छात्रा रचना ने किया।

संस्थान के कुलपति प्रो. दूगड़ की प्रोफेसर पद से सेवानिवृत्ति

कर्मरत रहने से ही बढा जा सकता है आगे– प्रो. दूगड़

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने अपने प्रोफेसर पद से सेवानिवृत्ति के अवसर पर 30 नवम्बर को आयोजित समारोह को सम्बोधित करते हुये कहा कि हमेशा कर्म को महत्त्व देना चाहिये। केवल कर्म ही व्यक्ति को प्रत्येक सफलता तक पहुंचाने में समर्थ होते हैं। उन्होंने इस अवसर पर संस्थान को दी गई अपनी सेवाओं का जिक्र करते हुये उन्हें कर्म क्षेत्र में किया गया प्रयोग बताया और कहा कि कर्मरत रहने पर ही वे निरन्तर आगे बढ पाये थे। इस अवसर पर प्रो. अनिल धर, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, डा. जुगलकिशोर दाधीच, कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ आदि ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुये संस्थान की स्थापना से लेकर अब तक अनवरत दी जा रही प्रो. दूगड़ की सेवाओं की सराहना की तथा कहा कि वे प्रोफेसर पद से सेवानिवृत्त हो रहे हैं, लेकिन कुलपति के रूप में उनकी सेवाओं का लाभ संस्थान निरन्तर उठाता रहेगा। प्रो. दूगड़ ने इससे पूर्व जैन विश्व भारती में विराजित मुनिश्री जयकुमार एवं अन्य जैन संतों का आशीर्वाद ग्रहण किया। कार्यक्रम में जैन विश्वभारती के पूर्व अध्यक्ष ताराचंद रामपुरिया, अशोक चिंडालिया, प्रो. आशुतोष प्रधान, प्रवीण बगड़िया, जीवणमल मालु, प्रो. दामोदर शास्त्री, प्रो. बीएल जैन, कनक दूगड़, डा. शांता जैन, डा. वीणा जैन सहित संस्थान का स्टाफ उपस्थित था।

संगठित टीम के सहयोग से देंगे संस्थान को नई उंचाइयां- संचेती

जैन विश्व भारती के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का समारोह पूर्वक सम्मान

जैन विश्व भारती के नवनिर्वाचित अध्यक्ष अरविन्द संचेती ने कहा है कि तेरापंथ धर्मसंघ के महत्त्वपूर्ण संस्थान के रूप में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय का नाम हम गौरव के साथ ले सकते हैं। आचार्य तुलसी ने इसे समाज की कामधेनु कहा था। आचार्य महाप्रज्ञ व आचार्य महाश्रमण ने भी इस विश्वविद्यालय को महत्त्वपूर्ण और जनमानस में चरित्र-निर्माण का संस्थान कहा था। जैन विश्व भारती का अध्यक्ष पद संभालने से इस विश्वविद्यालय से जुड़ने का सुअवसर भी मिला है। इसका वे पूरा सदुपयोग करेंगे। यहां आचार्य महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में 27 सितम्बर को विश्वविद्यालय द्वारा उनके दायित्व ग्रहण के पश्चात आयोजित सम्मान समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। निवर्तमान अध्यक्ष रमेश बोहरा ने संस्था की नई टीम को बधाई देते हुये कहा कि सामने आचार्य महाप्रज्ञ का रजत जयंती वर्ष और जैन विश्व भारती के स्वर्ण जयंती वर्ष की समस्त जिम्मेदारी इस टीम पर है।

नई सोच व क्षमतावान है नई टीम

समारोह की अध्यक्षता करते हुये कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने जैन विश्व भारती की स्थापना से लेकर वर्तमान स्वरूप तक की यात्रा का विवरण प्रस्तुत करते हुये स्थापना और विकास के कार्य में सहयोगी रहे सभी जनों का स्मरण किया। उन्होंने कहा कि समय बदलने से विकास की संभावनाओं में परिवर्तन आया है। मातृसंस्था जैन विश्व भारती का सत् सहयोग विश्वविद्यालय को मिलता रहा है। आचार्यों ने भी कहा था कि समाज और मातृसंस्था को विश्वविद्यालय पर बराबर ध्यान देते रहना चाहिये। उन्होंने पूर्व अध्यक्ष सुरेन्द्र चौरड़िया, डा. धर्मचंद लूंकड़ व रमेश बोहरा का उल्लेख उनके कार्यों व विशेषताओं का हवाला देते हुये संस्था की प्रगति में दिये गये योगदान के लिये किया तथा मुख्य ट्रस्टी भागचंद बरड़िया का योजनाओं के सफल क्रियान्वयन के लिये चिंतन की मूक भूमिका के लिये उल्लेख किया। नवनिर्वाचित पदाधिकारियों में अध्यक्ष अरविन्द संचेती को क्षमतावान व नई सोच का व्यक्तित्व बताया। मंत्री गौरव जैन को आज तक का सबसे युवा मंत्री बताते हुये कहा कि उनका बड़े कारोबारियों से उच्च सम्पर्क हैं तथा नवीन तकनीक को सबसे पहले आजमाने वाले व्यक्ति हैं। उन्होंने प्रधान ट्रस्टी मनोज लूणियां सहित पूरी टीम को श्रेष्ठ संयोग व क्षमतावान बताया तथा कहा कि इनसे संस्था को बल व विकास मिलेगा, संस्था नई उंचाइयों तक पहुंच पायेगी।

बेहिचक सुझाव दें

नवनिर्वाचित प्रधान ट्रस्टी मनोज लूणियां ने लाडनूंवासियों से संस्था के हित में बेहिचक सुझाव देने की अपील की तथा कहा कि वे उन पर अमल करने में कोई संकोच नहीं करेंगे। उन्होंने जैन विश्व भारती एवं जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय को एक-दूसरे का पूरक बताया। नव निर्वाचित मंत्री गौरव जैन ने कार्यकर्ता के रूप में काम करने का संकल्प व्यक्त किया। कार्यक्रम में विमल विद्या विहार सीनियर सैकेंडरी स्कूल की प्राचार्य बनिता धर, नवनिर्वाचित उपाध्यक्ष अरूण संचेती, मुमुक्षु प्रेक्षा व मुमुक्षु सरिता ने भी अपने विचार व्यक्त किये। प्रारम्भ में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया।

इन्होंने किया स्वागत-सम्मान

समारोह में नवनिर्वाचित टीम के अध्यक्ष अरविन्द संचेती, उपाध्यक्ष अरूण संचेती, मंत्री गौरव जैन, सहमंत्री अरूण चिंडालिया, जीवन मल मालु, कार्यकारिणी सदस्य मूलचंद बैद व उम्मेद कोचर एवं नियर्तमान मुख्य ट्रस्टी भागचंद बरड़िया का शॉल, स्मृति चिह्न व पुष्प गुच्छ प्रदान करके सम्मान किया गया। नई टीम को सम्मान करने वालों में निवर्तमान अध्यक्ष रमेश बोहरा, कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़, ओसवाल पंचायत के प्रमुख सरपंच नरेन्द्र सिंह भूतोड़िया, विजय सिंह कोठारी, शांतिलाल बैद, व्यापार मंडल के अध्यक्ष हनुमान मल जांगिड़, कांग्रेस अध्यक्ष रामनिवास पटेल, भारत विकास परिषद के संरक्षक रमेश सिंह राठौड़, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के मंत्री राजेश खटेड़, ओसवाल सभा के अध्यक्ष छतरसिंह बैद, सैनी समाज के अध्यक्ष मुरली मनोहर टाक, मंत्री महावीर प्रसाद तंवर, बृजेश माहेश्वरी, अभय नारायण शर्मा, अरविन्द नाहर आदि शामिल रहे। अंत में विजयश्री ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन नुपूर जैन ने किया।

खेलकूल प्रतियोगितायें आयोजित

खेल है व्यक्तित्व विकास का माध्यम

संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के अन्तर्गत आयोजित खेल सप्ताह के अन्तर्गत आयोजित खेलकूद प्रतियोगिताओं के समापन पर कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ में कहा कि खेलकूद से सर्वांगीण विकास संभव होता है। खेलों से जहां शारीरिक क्षमताओं में वृद्धि होती है, वहीं मानसिक व भावनात्मक क्षमतायें भी बलशाली बनती है। विद्यार्थी के व्यक्तित्व का विकास भी खेलों से संभव होता है।

खो-खो में पूजा, कबड्डी में लीला के समूह रहे प्रथम

संस्थान के खेल प्रभारी डॉ. रवीन्द्र सिंह राठौड़ ने प्रतियोगिताओं के परिणामों की घोषणा करते हुये बताया कि खो-खो प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर पूजा शर्मा व समूह, द्वितीय स्थान पर रिद्धि व समूह तृतीय स्थान पर किरण जुणावा और समूह रहा। कबड्डी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर लीला मण्डा और समूह, द्वितीय स्थान पर सीमा देवी और समूह, तृतीय स्थान पर हेमलता और समूह रहा। 100 मी. दौड़ में प्रथम राजू जाट, द्वितीय स्थान रीता, तृतीय शारदा डारा रही। 200 मी. में दिव्या पारीक प्रथम, द्वितीय मन्जू कलवानिया, तृतीय स्थान पर अन्तिमा रही। छात्रों में 100 मी. दौड़ प्रथम साकेत, द्वितीय अर्जुन, तृतीय मुक्तो रहे। 200 मी. में दौड़ प्रथम अर्जुन, द्वितीय मुक्तो एवं तृतीय साकेत रहा।

बेडमिंटन में राजदीप, शतरंज में दक्षता व कैरम में प्रवीणा रही विजेता

रविन्द्र सिंह ने बताया कि प्रतियोगिताओं में पुरुष बेडमिण्टन में प्रथम राजदीप, द्वितीय साकेत, तृतीय पारस जैन रहे। छात्रा वर्ग शतरंज में प्रथम विजेता दक्षता, द्वितीय कृष्णा, तृतीय मोनालिका रही। कैरम में प्रथम स्थान प्रवीणा कंवर द्वितीय भावना भाटी, तृतीय मन्जू सैनी रही। पुरुष वर्ग में शतरंज प्रथम विपुल, द्वितीय धनराज, तृतीय विश्वजीत रहे। लम्बीकूद छात्रा वर्ग में प्रथम राजू जाट, द्वितीय रेखा परमार, तृतीय राजलक्ष्मी रही। ऊँची कूद में प्रथम राजलक्ष्मी व द्वितीय राजू जाट रही। पुरुष वर्ग लम्बीकूद के प्रथम विजेता साकेत द्वितीय अर्जुन, तृतीय मुक्तो रहा। पुरुष वर्ग के ऊँची कूद के विजेता प्रथम सौरभ द्वितीय अर्जुन, तृतीय आनन्द पाल रहे। पुरुष वर्ग में कबड्डी के प्रथम विजेता नवीन सोनी, द्वितीय विजेता अर्जुन और समूह रहा। खेलकूद प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका इन्द्रा राम पूनिया व मुक्तो, तथा मनोज मण्डा ने निभाई। पुरुष वर्ग कैरम में प्रथम विजेता विश्वजीत, द्वितीय नवीन सोनी, तृतीय स्थान पर आमिक रहा। पुरुष वर्ग में टेबल-टेनिस के प्रथम विजेता विक्रम, द्वितीय महेश, तृतीय राजदीप रहे।

डिस्क थ्रो में कीमती, गोला फेंक में सीमा देवी प्रथम रही

खेल सप्ताह का शुभारम्भ 15 नवम्बर को गोला फेंक प्रतियोगिता में वित्ताधिकारी आरके जैन ने सर्वप्रथम गोला फेंक कर की। संस्थान के खेल सचिव डा. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने बताया कि विश्वविद्यालय में वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताओं में पहले दिन गोला फेंक, डिस्क थ्रो, कैरम, शतरंज व टेबिल टेनिस प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। डिस्क थ्रो में कुल 40 छात्राओं ने भाग लिया, जिनमें से प्रथम स्थान पर कीमती शर्मा, द्वितीय करिश्मा खान व तृतीय स्थान पर ललिता शर्मा रही। गोला फेंक प्रतियोगिता के छात्रा वर्ग में कुल 50 छात्राओं ने हिस्सा लिया, जिनमें से प्रथम सीमा देवी रही। द्वितीय स्थान पर सोनिका व तृतीय पूजा शर्मा रही। छात्र वर्ग में कुल 20 छात्रों ने भाग लिया, जिनमें से प्रथम विश्वजीत, द्वितीय नवीन व तृतीय आमिक रहा।

महिला कानूनों से संबंधित राष्ट्र व्यापी प्रतियोगिता का आयोजन

संस्थान में यू.जी.सी. द्वारा निर्देशानुसार महिलाओं से संबंधित विधियों पर महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए राष्ट्र-व्यापी प्रतियोगिता का आयोजन 17 दिसम्बर को किया गया। इस प्रतियोगिता में महिलाओं से संबंधित कानूनों पर आधारित प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया, जिसमें 75 बहुविकल्पी प्रश्न प्रतियोगियों के समक्ष रखे गये।

इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर भावना कंवर खंगारोत, द्वितीय स्थान पर सुनीता खीचड़ एवं तृतीय स्थान पर पांच प्रतिभागी कौशल्या सैनी, सुमन जाखड़, दमयन्ती राधा शर्मा एवं राधा कुमारी रहे। प्रतियोगिता का संचालन डॉ. अमिता जैन ने किया।

पूर्व छात्र सम्मेलन

मूल्यों के प्रसार में सहायक बनें पूर्व छात्र- प्रो. त्रिपाठी

संस्थान की एल्युमिनी एसोसियेशन का सम्मेलन यहां 17 नवम्बर को दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयोजित की गई। सम्मेलन के विशिष्ट अतिथि रजिस्ट्रार विनोद कुमार कक्कड़ ने पूर्व छात्रों से निरन्तर संस्थान के साथ जुड़े रहने और विकास में सहायक बनने तथा परस्पर सहयोग बनाये रखने की आवश्यकता बताई। एसोसियेशन के अध्यक्ष डा. आलम अली ने इस अवसर पर घोषणा की कि वे संस्थान के अध्ययनरत दो जरूरतमंद विद्यार्थियों की पूरी फीस स्वयं भरेंगे। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. त्रिपाठी ने पूर्व छात्रों को उच्च पदों पर सेवायें देने के लिये बधाई देते हुये उन्हें समाज में मूल्यों के प्रसार में सहयोगी बनने के लिये प्रेरित किया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में एसोसियेशन की सचिव डा. पुष्पा मिश्रा ने अपने स्वागत वक्तव्य में सम्मेलन के उद्देश्यों के बारे में बताया तथा कहा कि सभी पूर्व छात्र इस विश्वविद्यालय के ब्रांड एम्बेसेडर होते हैं तथा वे केरियर निर्माण के क्षेत्र में मार्गदर्शन करने की महत्ती भूमिका निभाते हैं। अंत में डा. आभासिंह ने आभार ज्ञापित किया।

इस सम्मेलन में एल्युमिनी एसोसियेशन के चुनाव भी सम्पन्न किये गये। चुनाव में अध्यक्ष डा. आलम अली, सचिव डा. रविन्द्र सिंह राठौड़, कोषाध्यक्ष डा. अशोक भास्कर तथा समन्वयक डा. विकास शर्मा को चुना गया। सम्मेलन में 53 पूर्व छात्रों ने भाग लिया। सम्मेलन के उपरांत सभी पूर्व छात्रों ने अपने-अपने विभाग के वर्तमान छात्रों से चर्चा-परिचर्चा की।

'A' Grade my NAAC & 'A' Category by MHRD

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम 1956 की धारा 3 के अन्तर्गत घोषित

मान्य विश्वविद्यालय

M.A.
M.S.W.
M.Phil.
Ph.D.

B.A./B.Com.
B.Sc.
B.A.-B.Ed
B.Sc.-B.Ed
B.Ed.-M.Ed.

Placement Assistance | Separate Hostels for Male & Female | Scholarship Facility | Internet Facility | Coaching for Competition Exams

विशेषताएँ

● राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा समाजोपयोगी कार्यक्रम ● व्यक्तित्व विकास शिविर द्वारा मूल्यपरक शिक्षण एवं प्रशिक्षण ● शैक्षिक भ्रमण ● राज्य एवं राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिताओं में संभागिता ● महाविद्यालय परिसर में चुस्त चैक व्यवस्था उपलब्ध ● अंग्रेजी संभाषण एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण जैसे पाठ्यक्रमों में रियायती शुल्क पर प्रशिक्षण ● योग्य अनुभवी शिक्षक एवं प्रबुद्ध समणी वर्ग द्वारा विशेष अध्यापन ● आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित अंग्रेजी संभाषण एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण हेतु उपयोगशाला लेबोरेटरी ● शान्त, सुरक्षित, अनुशासित एवं प्रदूषण मुक्त परिवेश ● सभी पाठ्यक्रम यू.जी.सी. एवं भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त ● संभाषण, लेखन, खेलकूद, साहसिक एवं रोमांचक खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से व्यक्तित्व निर्माण की दिशा में विशेष अवसर ● समृद्ध एवं विशाल पुस्तकालय की व्यवस्था ● छात्रावास एवं जिम की सुविधा ● प्रज्ञय विषयों का अध्ययन करने वाले छात्रों को स्कॉलरशिप देने का प्रावधान ● प्रतियोगी परीक्षाओं का प्रशिक्षण (NET, JRF, CA and CS) ● विषयों से सम्बन्धित विशेष कोचिंग कक्षाएं।

नियमित पाठ्यक्रम

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

एम.ए.

▸ जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ▸ दर्शन ▸ संस्कृत ▸ प्राकृत ▸ हिन्दी ▸ योग एवं जीवन विज्ञान ▸ क्लीनिकल साइकोलॉजी ▸ अहिंसा एवं शान्ति ▸ राजनीतिक विज्ञान ▸ समाज कार्य ▸ अंग्रेजी ▸ एम.एड. (उपरोक्त सभी विषयों में पीएच.डी. सुविधा)

एम.फिल.

▸ जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ▸ अहिंसा एवं शान्ति ▸ प्राकृत एवं जैन आगम

स्नातक पाठ्यक्रम

▸ बी.ए. ▸ बी.कॉम. ▸ बी.एस.सी. ▸ बी.ए.-बी.एड. ▸ बी.एससी-बी.एड. ▸ बी.एड. (केवल महिलाओं के लिए)

डिप्लोमा पाठ्यक्रम

▸ स्टडीज इन जैनिज्म ▸ नेचुरोपैथी ▸ प्रेक्षा योग थैरेपी ▸ एन.जी.ओ. मैनेजमेण्ट ▸ बैंकिंग ▸ रूरल डेवलपमेण्ट ▸ जेण्डर इम्पॉवरमेण्ट ▸ कॉरपोरेट सोशल रिस्पोन्सिबिलिटी ▸ ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेण्ट ▸ काउन्सलिंग एण्ड कम्युनिकेशन ▸ राजभाषा अध्ययन

प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

▸ प्राकृत ▸ संस्कृत ▸ योग एवं प्रेक्षाध्यान ▸ जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग शिक्षा ▸ अहिंसा एवं शांति ▸ जर्नलिज्म एण्ड मास मीडिया ▸ ऑफिस ऑटोमेशन एण्ड इंटरनेट ▸ फोटोशॉप ▸ एचटीएमएल-वेब डिजाईनिंग

पत्राचार पाठ्यक्रम

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

▸ जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ▸ शिक्षा ▸ हिन्दी ▸ राजनीति विज्ञान ▸ योग एवं जीवन विज्ञान ▸ अंग्रेजी

स्नातक पाठ्यक्रम

▸ बी.ए. ▸ बी.कॉम.

प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

▸ अहिंसा प्रशिक्षण ▸ अण्डरस्टेंडिंग रिलिजन ▸ जैन धर्म एवं दर्शन ▸ प्राकृत ▸ जैन आर्ट एंड एस्थेटिक्स ▸ ह्यूमन राइट्स ▸ प्रेक्षा लाईफ स्कील

फोन : 01581-226110, 224332, 226230 फैक्स : 225462 web : www.jvbi.ac.in e-mail : jvbiladnun@gmail.com

www.jvbi.ac.in

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं की ओर से विनोद कुमार कक्कड़ (कुलसचिव, जैन विश्वभारती संस्थान) द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित। मुद्रणालय - राजस्थान कलर स्केनर, जयपुर में मुद्रित। सम्पादक - समणी भास्करप्रज्ञा।